विदेशी मिशनरियों का

कुचक्र

प्रकाशक—

अखिल भारतीय आर्य [हिन्दू] धर्म सेवा संघ

पो० बिरला लाइन्स सब्जी मन्डी दिल्ली ।

...वा संघ,
...ल्ली।

...१९५९, संवत् २०१६ वि०
२०००
मूल्य—१५ नये पैसे
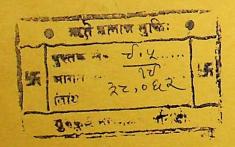
मुद्रक—
श्री लक्ष्मी प्रिंटिंग प्रेस, रोशनआरा बाग के सामने, दिल्ली।
फोन नं० २७४७९.

औषधि, छल, कपट तथा धन और ऋण आदि का प्रलोभन देकर, ईसाई बनाने में पानी की तरह खर्च करते हैं। नियोगी रिपोर्ट से यह भी प्रगट है कि सच्चे आत्म-विश्वास और सच्ची श्रद्धा से प्रेरित होकर ईसाई बनने वालों की संख्या बहुत ही थोड़ी और नगण्य सी है। अधिकांश लोग सांसारिक प्रलोभनों के वशीभूत होकर ही ईसाई बनते हैं।

कितने खेद और आश्चर्य की बात है कि जब से [illegible] तब से विदेशी ईसाई मिश्नरियों की गतिविधि और भी अधिक उग्र हो गयी है। इसकी चर्चा समय समय पर लोक सभा में, राज्यों की विधान-परिषदों में तथा समाचार-पत्रों में होती रही है। परन्तु परिणाम यह है कि स्वाधीनता से पहिले जितने विदेशी मिश्नरी भारत में ईसाई मत का प्रचार करते थे, उससे कहीं अधिक मिश्नरी आज देश के कोने कोने में फैले हुए भारतीय जनता को ईसाई बनाने तथा भारतीय संस्कृति, धर्म, राष्ट्रीयता और सुरक्षा की जड़ काटने में तत्पर हैं। स्वाधीनता के पहिले विदेशी मिश्नरियों को जो छूट और जो सुविधायें ईसाई मत के प्रचार तथा धर्म-परिवर्तन की, अंगरेजों के शासन-काल में प्राप्त थी, उससे अधिक छूट और सुविधायें आज स्वाधीनता मिलने के बाद विदेशी मिश्नरियों को मिली हुई हैं। स्वाधीनता के पहिले अनेक देशी रियासतों में ईसाई मिश्नरी धर्म-परिवर्तन का कार्य नहीं कर सकते थे। परन्तु आज उन रियासतों में भी मिश्नरी लोग बड़ी निर्भयता और स्वतन्त्रता के साथ लोगों को ईसाई बनाने में लगे हुए हैं। सरगुजा स्टेट इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है, जहाँ अधिकतर जनसंख्या बनवासी आदिवासियों की ही रहती है। स्वाधीनता के पहिले मिश्नरियों का प्रचार वहाँ नाम-मात्र को ही था परन्तु आज बहुत बड़ी संख्या आदिवासियों की वहाँ ईसाई बन चुकी है और बनती जा रही है। ऐसा [illegible] अन्य रियासतों तथा स्थानों का भी है। छोटानागपुर का सन्था[illegible] एक प्रबल गढ़ बन चुका है। यही परिस्थिति रा[illegible] आदि के उन क्षेत्रों की है, जहाँ अधिकतर आदि[illegible] आज वहाँ मिश्नरियों के प्रबल प्रचार और प्रलोभनों के द्वारा लोग धड़ाधड़ [illegible]ई बनते जा रहे हैं।

विदेशी मिश्नरियों की गतिविधि केवल हिन्दू-विरोधी ही नहीं, वरन् देश-विरोधी, राष्ट्रविरोधी और अनाचारपूर्ण भी है। नियोगी कमेटी की रिपोर्ट ने पूरी तरह से सिद्ध कर दिया है कि किस प्रकार विदेशी मिश्नरियों के पास अमेरिका तथा योरप के भिन्न भिन्न देशों से करोड़ों तथा अरबों रुपया आता रहा है और किस प्रकार वे उस रुपये को भोले भाले गरीब आदिवासियों, हरिजनों तथा अन्य पिछड़े हुए हमारे देशवासियों को, अनुचित दबाव, शिक्षा, छात्रवृत्ति, औषधि, छल, कपट तथा धन और ऋण आदि का प्रलोभन देकर, ईसाई बनाने में पानी की तरह खर्च करते हैं। नियोगी रिपोर्ट से यह भी प्रगट है कि सच्चे आत्म-विश्वास और सच्चो श्रद्धा से प्रेरित होकर ईसाई बनने वालों की संख्या बहुत ही थोड़ी और नगण्य सी है। अधिकांश लोग सांसारिक प्रलोभनों के वशीभूत होकर ही ईसाई बनते हैं।

भारत को छोड़कर आज कोई ऐसा सभ्य देश नहीं है, जहाँ विदेशी मिश्नरियों को धर्मान्तर करने की ऐसी छूट हो जैसी की भारत में हैं। मिश्र में मिश्नरियों के विरुद्ध कड़े से कड़े कानून बने हुए हैं। अफगानिस्तान में मिश्नरी घँस भी नहीं सकते। चीन में मिश्नरियों का प्रवेश बिलकुल बन्द कर दिया गया है और जो मिश्नरी पहले थे वे भी निकाल दिये गये हैं। अधिकतर स्वाधीन राष्ट्रों में मिश्नरियों के प्रवेश के विरुद्ध स्पष्ट विधान बने हुए हैं। यूरोप के ईसाई देशों में भी मिश्नरियों को जैसा चाहे वैसा वहाँ की जनता का धर्म-परिवर्तन कराने की खुली छूट नहीं है। नियोगी रिपोर्ट ने योरोप के भिन्न भिन्न देशों के विधानों से धर्म-परिवर्तन-सम्बन्धी धाराओं को उद्धत करके यह बात पूरी तरह से सिद्ध कर दी है। केवल भारत ही एक ऐसा देश है जिसने विदेशी मिश्नरियों को, उचित अनुचित सब उपायों द्वारा, जनता का धर्म-परिवर्तन करने की इतनी खुली छूट दे रक्खी है।

यदि मिश्नरियों को ऐसी ही खुली छूट बराबर मिलती रही और आदिवासियों तथा हरिजनों के ग्राम के ग्राम इसी प्रकार सामूहिक रूप से ईसाई बनते रहे, तो वह दिन दूर नहीं, जब अनेक ईसाईस्तान, अनेक गोआ और अनेक नागालैण्ड देश भर में यहाँ वहाँ बिखरे हुए दिखायी पड़ेंगे। पाकिस्तान की तरह ये ईसाईस्तान भी भविष्य में सरकार के लिए सदा चुभनेवाले कांटे का काम देते रहेंगे। अतएव देश के लिए मिश्नरियों की गतिविधि का राजनीतिक परिणाम भी कम गंभीर और कम घातक नहीं है। गोआ-समस्या, नागाविद्रोह, झारखंड-आन्दोलन यह सब हमारे लिए चेतावनी और खतरे की घंटी के रूप में हैं,जिनकी अवहेलना करना स्वयं अपने हाथों अपनी हत्या करने के समान है।

भारत के भिन्न भिन्न स्थानों से मिश्नरियों के काले कारनामों के सम्बन्ध में जितने दुःखद समाचार प्राप्त होते रहे हैं उन सबों को संग्रह करके जनता के समक्ष रक्खा जाय तो एक बड़ा पोथा तैयार हो सकता है। तथापि गत दो चार वर्षों के अन्दर जो सामग्री समाचार-पत्रों तथा अन्य सूत्रों द्वारा इस सम्बन्ध में प्राप्त हुई है, वह इस पुस्तक में बिना किसी टिप्पणी के प्रकाशित की जा रही है, ताकि लोग पढ़ें, सोचें और विचारें कि इस भयानक परिस्थिति में हमारा तथा हमारी सरकार का क्या कर्त्तव्य है और हमारे देश की भोली भाली वनवासी तथा पहाड़ी जातियों के धर्म और संस्कृति की रक्षा मिश्नरियों के घातक प्रहार से किस प्रकार की जा सकती है।

अन्त में हम उन समाचार-पत्रों तथा महानुभावों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रगट करते हैं जिनके लेखों, पत्रों और पुस्तकों से सामग्री उद्धृत करके हमने यहाँ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया है।

—प्रकाशक

ओ३म्

विदेशी मिश्नरियों का कुचक्र

१

ईसाई पादरियों द्वारा सामूहिक धर्मपरिवर्तन चिन्तनीय

केन्द्रीय रेल-मंत्री श्री जगजीवनराम की समस्या पर गम्भीरता से सोचने की अपील

हैदराबाद. २८ अक्तूबर। केन्द्रीय रेलवे मंत्री श्री जगजीवन राम ने आंध्र प्रदेश दलित वर्ग कर्मचारियों के सम्मेलन में भाषण करते हुए इस बात पर गंभीर चिन्ता व्यक्त की कि ईसाई लोग हरिजनों के सामूहिक धर्म-परिवर्त्तन में लगे हुए हैं।

उन्होंने कहा कि ब्रिटिश काल में हजारों की संख्या में हरिजनों ने ईसाई धर्म को स्वीकार किया था, परन्तु इन दिनों मध्यप्रदेश और हैदराबाद में ईसाई पादरियों ने लालच और डरा धमका कर सामूहिक धर्म-परिवर्त्तन (ईसाई बनाने) की नीति अपनाली है जो बहुत गंभीर है। सरकार इस घातक नीति पर गंभीरता से विचार करेगी।

सम्मेलन का उद्घाटन कांग्रेसाध्यक्ष श्री ढेबर ने किया था और आंध्र प्रदेश के श्रममंत्री श्री डी. सजीवन उसके अध्यक्ष थे।

श्री जगजीवनराम ने कहा कि मैं पिछले २५ वर्षों से ऐसे हरिजनों को पुनः हिन्दू धर्म में लाने के प्रयत्न में हूँ जिन्हें लालच देकर अथवा दबाव में डाल कर ईसाई बना लिया गया है। उन्होंने कहा कि जो लोग समझ बूझकर ईसाई बनते हैं उनकी बात मैं नहीं कहता, परन्तु जिन लोगों को अज्ञान के कारण धर्म-परिवर्त्तन करना पड़ा है उनके साथ अन्याय किया गया है और इसकी जिम्मेदारी ईसाई पादरियों पर है।

उन्होंने कहा कि बहुत से हरिजन ईसाई बनने पर भी देवी-पूजा करते हैं और अन्य हिन्दुओं की तरह पर्व मनाते हैं, जो इस बात का जागृत सबूत है कि उनके अज्ञान का लाभ पादरियों ने उठाया है और उन्हें लालच देकर ईसाई बनाया गया है। यहीं तक नहीं, जातियों के आधार पर इन ईसाइयों के लिए अलग-अलग गिरजाघर भी हैं।

रेल-मंत्री ने हरिजनों से कहा कि समाज में आपके प्रति किसी प्रकार की दुर्भावनाएं हैं ऐसा सोचकर आप धर्म-परिवर्तन न करें, क्योंकि शताब्दियों से जो बुराई देश में आगई है हम उसे दूर करने में लगे हैं और समय आने पर सब ठीक हो जायगा। उन्होंने कहा कि हिन्दू रहते हुए आपके सामने कुछ समस्याएं हो सकती हैं, परन्तु वैसी अथवा उससे भी बड़ी समस्याएं ईसाई बनने पर भी हो सकती हैं, तब क्या यह अनावश्यक नहीं है कि आप बुजदिली में आकर धर्म छोड़ दें।

हिन्दू धर्म में कुछ बुराई आ गई है, उन्हें दूर करना अन्य लोगों की तरह आपका भी कर्त्तव्य हो जाता है।

श्री जगजीवनराम ने कहा कि जो लोग अपनी खुशी से ईसाई धर्म की अच्छाई-बुराई को समझ कर धर्म-परिवर्त्तन करते हैं उन्हें कोई नहीं रोक सकता और न ही उन्हें रोकने में किसी प्रकार का तर्क हमारे सामने है। मुझे तो केवल धर्म-परिवर्त्तन के उस तरीके से नफरत है जो भोले-भाले लोगों को लालच में डालकर अथवा दबाव में लाकर किया जाता है।

इससे पूर्व सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए श्री ढेबर ने कहा कि हम एक नए राष्ट्र व नए समाज के निर्माण में लगे हुए हैं और यह कार्य तभी पूरा हो सकता है जबकि राष्ट्र के सभी ३६ करोड़ लोग एक परिवार की तरह रहेंगे और ऊंच-नीच तथा गरीब-अमीर का भेदभाव छोड़ देंगे।

अन्त में सम्मेलन में एक प्रस्ताव स्वीकार कर इस बात पर गंभीर चिन्ता व्यक्त की गई कि हरिजनों का सामूहिक तौर पर धर्म परिवर्तन किया जा रहा है और उन्हें ईसाई बनाया जा रहा है। इसके निराकरण के लिए हरिजनों को चाहिए कि वे उन हरिजन ईसाइयों को पुनः अपने धर्म में ले लें।

एक अन्य प्रस्ताव में केन्द्रीय सरकार से प्रार्थना की गई कि वह संविधान में संशोधन करके हरिजनों और परिगणित जाति के लोगों को विधान-सभाओं व संसद् में सुरक्षित स्थान देने की अवधि में वृद्धि करे।

—हिन्दुस्तान, २९ अक्टूबर १९५८

२

आदिवासी क्षेत्र में ईसाई मिश्नरी की हलचल

विवाहिता लड़की को रोकने के विरुद्ध अदालत का फैसला

मध्यप्रदेश में ईसाई मिश्नरियों की गतिविधि से शंकित होकर मध्यप्रदेश शासन ने उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री नियोगी की अध्यक्षता में तथा भूतपूर्व मध्य भारत राज्य में श्री रेगे की अध्यक्षता में अलग-अलग आयोगों की नियुक्तियां की थीं और दोनों ही आयोगों के सदस्यों ने पूरी जांच-पड़ताल और परिश्रम से निष्पक्ष रिपोर्ट दी थी। इनसे मिश्नरियों के भयंकर कुचक्रों का भंडाफोड़ हुआ था, किन्तु कुछ पता नहीं चला कि इन रिपोर्टों का क्या हुआ। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व ईसाई प्रचार मुट्ठी भर लोग करते थे, किन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद जगह-जगह स्कूल, अस्पताल, अनाथालय आदि के द्वारा पिछड़े हुए क्षेत्रों में मिश्नरियों की गतिविधियां बढ़ती दिखाई देती हैं। भोलीभाली दरिद्र आदिवासी जनता को लालच देकर ईसाई बनाया जा रहा है। अभी पिछले सप्ताह झाबुआ के जिला न्यायाधीश के निम्नलिखित फैसले से एक सनसनीपूर्ण भंडाफोड़ हुआ है।

जिस प्रकार ईसाई पादरी नरोना ने एक कन्या को अपने मिशन में कन्या की इच्छा के विरुद्ध ईसाई से विवाह करने को रोक रखा है वह निश्चय से गैर-कानूनी उद्देश्य है। हरीसिंह कन्या का पति कानूनी संरक्षक है। कन्या वधू को उसे सौंपा जाना चाहिये, क्योंकि यह प्रकरण एक नाबालिग कन्या को गैर-कानूनी तौर पर गैर-कानूनी कार्य के लिये रोके रखना है। ईसाई पादरी नरोना का उस कन्या पर कोई अधिकार नहीं है, अपितु उसका उद्देश्य उस कन्या को तलाक दिलाकर उसकी इच्छा के विरुद्ध किसी ईसाई से दूसरा विवाह कराने का है। प्रार्थी जो उसका पति है उसका रक्षण करने का अधिकारी है। यह निर्णय

झाबुआ जिला न्यायाधीश ने जाब्ता फौजदारी की धारा ५५२ के अनुसार प्रार्थना-पत्र पर दिया।

विद्वान् न्यायाधीश ने प्रकरण की चर्चा करते हुए लिखा है कि पादरी नरोना उक्त कन्या, उसके पति हरीसिंह और पिता के बीच समझौता कराने में दिलचस्पी ले रहा है। एक ईसाई प्रचारक के नाते ऐसे प्रकरणों में उनकी ऐसी दिलचस्पी अनावश्यक है तथा उनकी इस प्रकार की हलचलों पर निगरानी रखने तथा धिक्कारने की आवश्यकता है। यह इसलिये भी विशेषत: आवश्यक है कि ईसाई प्रचारक अपने बोर्डिंग हाउसों में स्त्रियों को रखने का लायसेंस प्राप्त नहीं करते हैं, जब कि उन्हें मध्य भारत में प्रचलित कानूनों के अन्तर्गत ऐसा लाइसेंस लेना आवश्यक है। इस कन्या को स्कूल में पढ़ाया नहीं जाता है, किन्तु वह ईसाई पादरी के पवित्र चरणों में उनकी निजी सेवा करती है, इन परिस्थितियों में कन्या का रोका जाना गैर-कानूनी पाया जाता है।

इस प्रकरण में ईसाई पादरी नरोना ने स्वीकार किया है कि कन्या वदू गिरजाघर के घेरे में घरेलू काम काज और पादरी की निजी सेवा करती है। कन्या ने भी अपने कथन में प्रकट किया है कि पार्दरी नरोना उसका दूसरा विवाह करना चाहता है तथा वह ईसाई पाठशाला में रहती है, किन्तु इसे लिखना-पढ़ना नहीं सिखाया जाता, वह तो पादरी का निजी कार्य करती है।

विद्वान् न्यायाधीश ने प्रचलित कानूनों की चर्चा करते हुए लिखा है कि इस प्रकरण में यह देखना है कि पादरी ने किस प्रकार भाग लिया। प्राय: ईसाई प्रचारक यह कहते हैं कि वे दूसरे धर्मवालों को कानूनी तरीकों से राजी करके तब ईसाई धर्म में दीक्षित करते हैं। किन्तु यह आश्चर्यजनक है कि पादरी नरोना यह कार्य करते हुये जबरदस्ती धर्म-परिवर्तन के लिये विवाह करवाते हैं, जैसा कि इस प्रकरण में प्रमाणों से सामने आया है।

आगे चलकर न्यायाधीश ने कहा कि पादरी इस प्रकरण में बहुत महत्वपूर्ण भाग ले रहे हैं और ऐसे मामलों में अधिक दिलचस्पी लेते दिखाई दे रहे हैं। वह न केवल विवाह के झगड़ों को निपटाते हैं किन्तु आदिवासियों के झगड़े में न्यायालय का कार्य भी करते हैं। वह उक्त बदू का किसी ईसाई से विवाह करना चाहते हैं, यह जानते हुए भी कि उसका विवाह हरीसिंह प्रार्थी से हो चुका है।

प्रकरण की कहानी इस प्रकार है:—कोई अढ़ाई वर्ष पूर्व प्रार्थी हरीसिंह का विवाह खीमाडामर भील की कन्या बदू से हुआ था। बदू विवाह के बाद एक वर्ष के लगभग पति के साथ रही। प्रार्थनापत्र प्रस्तुत होने के छ: मास बाद

पिता खीमा कन्या को अपने घर ले गया और अपनी स्त्री से उसे भेजने को कहा, किन्तु उसने उसे नहीं भेजा। प्रार्थी को यह भी पता चला कि उसकी स्त्री तो ईसाई गिरजाघर क्षेत्र में पादरी नरोना के पास रहती है। प्रार्थी और कन्या का पिता दोनों पादरी नरोना के पास गये और बदू को वापस ले जाने को कहा। इस पर पादरी ने पति हरीसिंह को ईसाई धर्म स्वीकार करने को कहा, क्योंकि बदू ईसाई है। उसने यह भी कहा कि बदू ईसाई है, इसलिये उसका विवाह एक ईसाई पति से ही होगा। प्रार्थी ने ईसाई धर्म स्वीकार करने से इन्कार कर दिया और इस न्यायालय में अपनी स्त्री का कब्जा दिलाने की मांग की। बदू की अवस्था सत्रह वर्ष की है और इस प्रकार वह प्रार्थी की नाबालिग स्त्री है।

विद्वान् न्यायाधीश ने बदू का कब्जा उसके पति हरीसिंह को दिलाने की आज्ञा देते हुए लिखा है कि यदि मातापिता भी पति की इच्छा के विरुद्ध अपनी कन्या को दूसरे विवाह के लिये रोकते हैं तो यह गैर-कानूनी काम है। पादरी नरोना का यह काम भी उसी प्रकार गैर-कानूनी है। इसलिये प्रार्थी की नाबालिग स्त्री, जिसे ईसाई गिरजाघर क्षेत्र में गैरकानूनी कार्य के लिये गैरकानूनी तौर पर रोक रखा गया है, उसे धारा ५५२ जाब्ता फौजदारी के अन्तर्गत प्रार्थी हरीसिंह (कन्या के पति) को सौंपने की आज्ञा देता हूँ।

— नव भारत टाइम्स, दिल्ली,
८ अप्रैल १९५८

३

ईसाई प्रचारकों के हथकंडे

भ्रम में डाल कर धर्म-परिवर्तन

ईसाई पादरियों ने आदिवासियों एवं हरिजनों के बीच ईसाई धर्म के प्रचार के जो हथकंड़े अपनाये हैं, वे न केवल भारतीय संस्कृति अपितु हमारी नई स्वाधीनता के लिए भी हानिकारक सिद्ध हो सकते हैं। यह मत हजारीबाग जिले में घूम कर सारी स्थिति का अध्ययन करने के बाद आर्य समाज के एक प्रचारक श्री भूपेन्द्र नारायण सिंह ने प्रगट किया है।

उन्होंने बताया है कि चितपुर नामक गांव में ईसाई पादरियों ने एक बार वहाँ के जंगली और देहाती क्षेत्र में हरिजनों एवं आदिवासियों की सभा में भारत-सरकार की भरपूर निन्दा की और स्वाधीनता की अनर्गल बुराइयां उन्हे बतायीं। ईसाई पादरियों ने उनसे यहाँ तक कहा कि १९४७ के पहले जब भारत में अंग्रेजी शासन था तब तुम स्वतंत्र थे, यहाँ की जमीन तुम्हारी थी, जंगल तुम्हारा था, पहाड़ तुम्हारा था और तुम उसमें स्वच्छन्द विचरण करते थे। पर गांधी जी का राज्य क्या आया, तुम्हारे ऊपर कष्टों के पहाड़ आ पड़े। तुम्हारी जमीन छीन ली गई और जंगल भी ले लिया गया। तुम भूखे और नंगे हो। अतएव अब ईसा की शरण में आओ और उनसे प्रार्थना करो कि हम फिर से सुखी हों, पुनः पूर्व का-सा जीवन व्यतीत करें।

हजारी बाग जिले में विभिन्न गांवों में इस तरह का भ्रामक प्रचार जोर शोर से चल रहा है। लोगों को प्रभावित करने के लिए विद्यालय खोले जा रहे है, दवाखाने खोले जा रहे हैं और उन्हें ईसाई बनाया जा रहा है। भोले २ ग्रामीणों में बिस्कुट, लेमनजूस, चौकलेट, अमरीकी घी एवं वस्त्र आदि का वितरण किया जाता है इसके कई उदाहरण बड़े रोचक मिले हैं।

अनर्थकारी तरीका

एक स्थान की कहानी है कि मिशनरी विद्यालय के कुछ अबोध बालकों को मोटरगाड़ी पर बिठा कर सुदूर जंगली स्थानों में ले जाया गया। बीच में बिलकुल सुनसान स्थानमें मोटरगाड़ी अचानक रोक दी गई और बालकों से कहा गया कि गाड़ी खराब हो गई है, इसलिए बढ़ती नहीं। पादरी ने बालकों से कहा कि अब तो शाम हो गई, तुम लोगों के घर भी दूर हैं। मोटर खराब हो गई है। तुम लोग अब भगवान् राम और कृष्ण से प्रार्थना करो कि वह हमारी गाड़ी आगे बढ़ायें। बेचारे अबोध बालक प्रार्थना करते हैं। मोटर चालक गाड़ी को आगे बढ़ाता नहीं। इस पर पादरी फिर कहता हैं, देख लिया अपने भगवान् राम और कृष्ण को? अब जरा ईसा-मसीह से प्रार्थना कर देखो। राम कृष्ण तो बहरे हैं। तब ईसा मसीह के नाम से प्रार्थना करवाई जाती है और प्रार्थना समाप्त होते ही गाड़ी बढ़ जाती है। यह जादू बालकों पर मनोवैज्ञानिक असर कर जाता है।

और भी उदाहरण हैं। कभी-कभी उन बालकों को अच्छे कपड़े आदि पहना कर देहातों में ले जाया जाता है। वहाँ के गरीब और वस्त्रहीन बच्चों से

कहा जाता है कि देखो ईसा मसीह की शरण में आने से कितने अच्छे स्वच्छ वस्त्र मिलते हैं, मोटर पर चढ़ने को मिलता है, तुम भी ईसा की शरण में आकर अपना जीवन सुधारो। ये हैं हथकंडे ईसाई पादरियों के।

—हिन्दुस्तान १२ जुलाई १९५५ ई०

४

सरकार ईसाई धर्म-प्रचार में सहायक

आदिवासी तथा हरिजन ईसाई बनने पर विवश

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सेनापति ने कहा कि अनुसूचित जातियों की स्थिति सुधारने पर १५ सितम्बर को लोक सभा में हुई बहस में भाग लेते हुए श्री एम० जी उइके (कांग्रेस) ने विस्तृत आंकड़े देकर बतलाया कि हरिजनों तथा आदिवासियों के बच्चों को जो छात्रवृतियां दी जाती हैं उनमें से अधिकांश छात्रवृत्तियां ईसाई छात्र हड़प लेते हैं। यदि यही रवैया रहा तो वह समय दूर नहीं जब भारत के अधिकांश हरिजन व आदिवासी ईसाई बन जायेंगे। उन्होंने कहा कि हरिजनों तथा आदिवासियों के बच्चों के लिये छात्रवृत्तियों का जो कोटा है वह ईसाई बने बच्चों के कोटे से अलग कर दिया जाय।

आपने प्रमाण देकर सिद्ध किया कि इन्हीं कारणों से सन् १९४१ की जनगणना की तुलना में सन् १९५१ की जनसंख्या के अनुसार हरिजनों तथा आदिवासियों की संख्या कम हो गई है। आपके इस वचन का अन्य बहुत से कांग्रेसी तथा गैर-कांग्रेसी सदस्यों ने समर्थन किया।

परन्तु खेद के साथ कहना पड़ता है कि इस बहस तथा चेतावनी की सर्वथा उपेक्षा करते हुए भारत के उपगृह मन्त्री श्री वी० एन० दातार जी ने कहा कि आदिवासियों के ईसाई बन जाने पर भी उन्हें उसी प्रकार आर्थिक सहायता तथा छात्रवृत्तियां मिलती रहेंगी जिस तरह ईसाई न बने आदिवासिवों को दी जाती हैं।

कुछ समय पूर्व आदिवासियों का वह प्रतिनिधि मण्डल भारत के राष्ट्रपति से मिला था, जिसने सविनय प्रार्थना की थी कि जो आदिवासी

ईसाई बन गये हैं उन्हें आदिवासियों में सम्मिलित न किया जाय, क्योंकि वे विदेशी ईसाई मिशनों द्वारा यथेष्ठ आर्थिक सहायता प्राप्त कर खुशहाल व सुशिक्षित बन गये हैं। यदि उन्हें सहायता दी भी जाय तो मिशन के द्वारा न दी जाय, क्योंकि इससे अन्य आदिवासियों को ईसाई बनने की ही प्रेरणा मिलती है।

—वीर अर्जुन, २४ सितम्बर १९५५ ई०

५

बलात् धर्म-परिवर्तन का प्रयास

सात ईसाई मिश्नरी गिरफ्तार

हजारीबाग, २८ अगस्त। यहाँ से सोलह मील दूर दातों ग्राम कचहरी के आर्डर से सात ईसाई प्रचारकों को गिरफ्तार कर हजारीबाग जेल भेज दिया गया है। इन प्रचारकों पर तीन वार सम्मन जारी किया गया था, परन्तु वे कचहरी में हाजिर नहीं हुए।

कुछ दिन पूर्व दातोंखुरद ग्राम के दिलजान मियां नामक एक व्यक्ति ने ग्राम पँचायत में यह अभियोग दायर किया था कि ईसाई मिश्नरियों ने उसकी भूमि पर जबरदस्ती कब्जा कर उसे बेदखल कर दिया है। अभियोग में यह भी बताया गया था कि मिश्नरियों ने जमीन वापस करने की शर्त ईसाई धर्म को स्वीकार कर लेने की रखी है।

उक्त गिरफ्तारी के दो दिन पूर्व दातों में आसपास के लगभग ५० गांवों की एक वृहत्सभा हुई थी, जिसमें मिश्नरियों की हरकतों के विरुद्ध प्रस्ताव पास कर सरकार का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया गया था।

इसी सभा में लगभग ५०० आदिवासियों ने ईसाई धर्म छोड़कर पुनः हिन्दू धर्म स्वीकार करने की इच्छा भी व्यक्त की थी। उन्होंने शुद्धि के लिये आर्यसमाज के पास आवेदन पत्र भी भेजा है। हि. स.

—नव भारत टाइम्स, २७ अगस्त १९५८

६

मिश्नरियों को विदेशों से धन की सहायता

नयी दिल्ली, २८ जनवरी। पिछले साल जून में समाप्त हुए २॥ अढ़ाई वर्षों में भारत में काम करने वाले मिश्नरियों को विदेशों से करीब २४ करोड़ रु० भेजे गये।

१९५६ में ९ करोड़ २८ लाख रु० विदेशों से भारत आया और अगले साल १९५७ में ९ करोड़ ५३ लाख रु०। इसी प्रकार १९५८ के पूर्वार्ध में इन मिश्नरियों को विदेशों से ५ करोड़ रु० भेजा गया।

अमेरिका से १८ करोड़ ४० लाख रु० भेजा गया, स्टर्लिंग क्षेत्र से ३ करोड़ ३० लाख रु० और अन्य देशों से २ करोड़ रु० आया।

जनवरी १९५६ में भारत में रजिस्टर्ड विदेशी मिश्नरियों की संख्या ५,६९१ जनवरी १९५७ में ५,५२१ और जनवरी १९५८ में ४,८४४ थी।

—प्रेस ट्रस्ट

७

ईसाई बनाने का तरीका

पटना, १३ नवम्बर। छोटा नागपुर के एक प्रसिद्ध ईसाई पादरी पर रांची जिले के खूंटी नामक स्थान में सब डिवीजनल मजिस्ट्रेट ने एक मुकदमे के सम्बन्ध में ७५ रुपए का जुर्माना किया है।

यह मुकदमा भारतीय दंड संहिता की धारा ३७९ के अन्तर्गत दायर किया गया था। पादरी पर चोरी का आरोप था। कहा जाता है कि उक्त पादरी ने गत अप्रैल मास में छोटानागपुर के बनगांव क्षेत्र में लगभग तीन सौ हरिजनों और आदिवासियों को ईसाई बनाया। अभियोग यह है कि पादरी साहिब ने दो हजार रुपए उधार लेकर जमीन खरीद ली और दो मास में पैसे लौटाने का वादा किया, परन्तु बाद में जमीन मालिक से कहा कि वह रुपए लेना चाहता है तो उस को स्वयं तथा बच्चों के साथ ईसाई बनना होगा।

—हिन्दुस्तान, १४ नवम्बर, १९५८

८

दोहद में ३०० भीलों को ईसाई बनाने का यत्न

लाठियां चल गईं, कई घायल

दोहद मध्य प्रदेश । पिछले दिनों परेल के गिरजाघर में लगभग तीन सौ भीलों को जबर्दस्ती ईसाई बनाने का प्रयत्न किया गया ।

यह समाचार मिलते ही हिन्दुओं में दुःख की लहर दौड़ गई और उन्होंने पुलिस तथा मजिस्ट्रेट से सहायता मांगी । पुलिस ने आकर पादरियों को ऐसा करने से रोका । इस बीच वहाँ ईंटों और पत्थरों की वर्षा प्रारम्भ हो गई । कुछ लाठियां भी चलीं । गिरजाघर की सजावट नष्ट हो गई । पुलिस ने गड़बड़ को रोकने के लिये साहस से काम लिया । कई हिन्दू और इसाई घायल हो गए। कुछ पुलिस वाले भी घायल हुए । कुछ घायल अस्पताल भेजे गए । अन्ततः पुलिस शान्ति स्थापित करने में सफल हो गई । भीलों को जो राजस्थान, मध्य-प्रदेश के अन्य स्थानों उदमगढ़ आदि से लाए गए थे, पुलिस की लारियों में स्टेशन पर ले जा कर छोड़ा गया ।

परन्तु पता चला है कि रात को इन में से ५०, ६० भीलों को इसाई अपनी गाड़ियों में बिठा कर ले गए।

—दैनिक वीर अर्जुन, २१ फरवरी, १९५९

९

ईसाई प्रचारकों की देश-विरोधी कार्रवाइयां खतरनाक

सरकार को चेतावनी। आर्थिक प्रलोभन व दबाव से धर्मपरिवर्तन की निन्दा

आर्य समाज के नेताओं ने सोमवार को पत्रप्रतिनिधि-सम्मेलन में चेतावनी दी है कि यदि विदेशी ईसाई मिश्नरियों की अराष्ट्रीय गतिविधियों पर तुरन्त सरकारी तौर पर प्रतिबन्ध न लगाया गया तो भारत के सांस्कृतिक तथा राजनीतिक हितों को बहुत बड़ा धक्का लगेगा और देश की सुरक्षा खतरे में पड़ जाएगी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधानमंत्री लाला राम गोपाल शालवाले तथा आर्यवीर दल के प्रधान संचालक श्री ओमप्रकाश त्यागी ने, जो अभी बिहार, उड़ीसा के कुछ क्षेत्रों का दौरा करके आये हैं, बताया कि विदेशों से प्राप्त अपार आर्थिक सहायता के आधार पर ये विदेशी मिश्नरी पिछड़ी

जातियों को दूध, घी, वस्त्र और अन्य प्रकार के आर्थिक प्रलोभन देकर धर्मपरिवर्तन करते हैं। धर्मपरिवर्तन के साथ-साथ उनकी वेशभूषा, रहन-सहन एवं राष्ट्रीयता की भावना बदलकर मुस्लिम लीग की भाँति द्विराष्ट्री सिद्धान्त की भावना भरते हैं। अनेक स्थानों पर आतंक व बल-प्रयोग के द्वारा बलात् धर्म-परिवर्तन कराया जाता है और आर्य समाजी धर्म-प्रचारकों पर घातक हमले किये जाते हैं। उन्होंने इस बात पर दुःख प्रकट किया कि अधिकारियों से तत्सम्बन्धी शिकायत करने पर ऊपरी प्रभाव के कारण वे लोग ईसाईयों के साथ पक्षपात्-पूर्ण व्यवहार करते हैं।

विदेशी मदद बन्द की जाए

वक्तव्य में सरकार से अनुरोध किया गया है कि ईसाई मिश्नरियों की राष्ट्र विरोधी एवं राष्ट्रघातक कार्रवाईयों को रोकने के निमित्त इन मिश्नरियों को बाहर से मिलने वाली सहायता तुरन्त बन्द की जाय, दूध, वस्त्र, घी आदि का वितरण सरकारी एजेन्सियों द्वारा किया जाय और हरिजन, आदिवासी आदि जनजातियों को सरकार ने राजनीतिक संरक्षण दे रखे हैं, उन्हें धार्मिक संरक्षण प्रदान कर इनके बलात् धर्मपरिवर्तन पर तुरन्त प्रतिबन्ध लगाया जाय। इन नेताओं ने नियोगी कमेटी की सिफारिशों पर अविलम्ब अमल करने की मांग की है।

आर्यसमाज ने स्वयं भी ईसाई मिश्नरियों की गतिविधियों को रोकने के लिये कार्यक्रम तैयार किया है, जिसके अनुसार ईसाई प्रभावित क्षेत्रों में दयानन्द सेवाश्रमों की स्थापना की जायेगी, सांस्कृतिक शिविर लगाये जायेंगे और प्रशिक्षण-शिविर लगा कर इस निमित्त कार्यकर्त्ता तैयार किये जायेंगे, जो वहाँ जाकर काम करें।

बताया गया है कि स्वतंत्रता से पूर्व इन ईसाई प्रचारकों की संख्या २२७१ थी, परन्तु अब स्वतन्त्र भारत में ४८४४ है। ३॥ वर्षों में विदेशों से इन्हें ३९ करोड़ रु. मिला है।

—हिन्दुस्तान, ७ अप्रेल १९५९ ई०

१०

ईसाई मिशन द्वारा धर्म-परिवर्तन

(निज सम्वाददाता द्वारा)

बरेली । किसान सभा, खटीमा (जिला नैनीताल) के नेता श्री अब्दुल लतीफ सिद्दीकी ने नवभारत टाइम्स के बरेली स्थित सम्वाददाता को भेजे एक समाचार में बताया है कि खटीमा, टनकपुर और जिला अल्मोड़ा का वह भाग जो नैपाल और तिब्बत की सीमाओं में मिला है, वहाँ पर अमरीकी ईसाई मिश्नरियों के कुचक्र का अड्डा बना हुआ है। इन मिश्नरियों ने सीधे-साधे लोगों को बहका कर उनका धर्म-परिवर्तन करा दिया है तथा कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों को बड़ी २ रकम देकर खरीद लिया है। टनकपुर और बनबसा के पहाड़ी क्षेत्रों में मिशन के अलावा अन्य ईसाइयों ने बड़े परिमाण में भूमि पर अधिकार कर लिया है। श्री सिद्दीकी ने लिखा है कि अमरीकी और भारतीय मिश्नरियों ने यहाँ के पुलिस अधिकारियों को खरीद लिया है जिस कारण वह इनकी हरकतों के विरुद्ध कुछ नहीं कर पाते हैं।

—नवभारत टाइम्स, २६ फरवरी, १९५९

११

ईसाइयों द्वारा हरिजनों को प्रलोभन

(हमारे सम्वाददाता द्वारा)

हिसार। गत कई दिनों से ईसाइयों द्वारा निर्धन हरिजनों को प्रलोभन देकर उन्हें ईसाई बनाने के समाचार मिल रहे हैं। ईसाई पादरी निर्धनों की इस दुर्बलता का अनुचित लाभ उठा रहे हैं। अभी हाल ही में एक सिख-हरिजन अपने बाल-दाढ़ी आदि कटवा कर ईसाई बन गया। इससे नगर में बड़ी सनसनी फैली हुई है। सरकार को अविलम्ब ही इस प्रकार प्रलोभन देकर धर्म-परिवर्तन की घटनाओं को रोकना चाहिये।

—नवभारत टाइम्स, २६ फरवरी, १९५९

१२

६ ईसाई मिश्नरियों को अर्थ-दण्ड

जशपुर नगर, ११ मार्च । जशपुर नगर के ईसाई पादरी फादर बुल्कान्स और क्रिश्चियन रोमन कैथोलिक मिशन के पांच ईसाई प्रचारकों को भारतीय दण्ड संहिता के अनुसार अनेक जुर्मों के कारण यहाँ के एक मजिस्ट्रेट श्री के. के. आर. नायडू ने जुर्माना की सजा दी।

घटना इस प्रकार है कि एक हिंदू युवक एक ईसाई बाला से विवाह करना चाहता था। इन ईसाई पादरी और प्रचारकों ने उसे बरगलाया और कहा कि ईसाई धर्म ग्रहण किये बिना यह विवाह असम्भव है। अभियुक्तों की यह बात मानने के लिये न तो युवक तैयार था न युवती। इस पर फादर बुल्कान्स के मातहत उक्त युवक को एक सप्ताह तक गिरजाघर में अनुचित तरीके से नजरबंद करके रखा गया। उसकी चोटी काट दी गयी और ईसाई प्रतिज्ञा बोलने के लिए विवश किया गया। पुलिस को युवक की तलाश थी, उसने उसे गिरजाघर से बरामद किया।

फादर बुल्कान्स पर २०० रु. जुर्माना और अन्य पांच लोगों में प्रत्येक को २५ रु. जुर्माना किया गया। (हि. स.)

१३

यह है ईसाईयों की शान्तिप्रियता

जगदलपुर (डाक से)

श्यामवती एक इसाई बाला है। कस्तूरी ग्राम की रहने वाली है। उस ने तुलेनार ग्राम के नवयुवक लक्ष्मीनाथ माहरा से न जाने प्रेम किया अथवा उसे फाँसा। २-२-५५ को महाराजा साहब का उपनयन संस्कार देखने आई श्यामवती जगदलपुर में। ३-२-५५ को उस का प्रेमी जगदलपुर पहुँच कर उसे तुलेनार ले गया। पता लगने पर कस्तूरी के कुछ ईसाई, लड़की को वहाँ से न जाने किस तरह कस्तूरी ले गये। लड़की के शरीर पर लक्ष्मीनाथ द्वारा पहिनाये गये सोने के आभूषण थे। अपने पिता के साथ कस्तूरी जा कर लक्ष्मीनाथ ने लड़की तथा आभूषणों की माँग की। ईसाइयों ने कहा–'श्यामवती को चाहते हो, तो ईसाई बन जाओ। आभूषण चाहते हो तो १५) जुर्माना दो अथवा १५ बेंत मार खाओ।' लक्ष्मीनाथ वापिस चल दिया और १८-३-५५ को उस ने नगरनार थाने में रिपोर्ट कर दी। अभी तक परिणाम कुछ भी नहीं निकला है। (यु. स.)

१४

३ हजार का प्रलोभन दे कर ईसाई बनाया

जांजगीर (डाक से)। प्रमाणित तौर पर पता चला है कि वासुदेव प्रसाद मिश्र नामक तहसील महासमुंद, जिला रायपुर के ब्राह्मण ने तीन हजार रुपये के प्रलोभन द्वारा ईसाई बना लिये जाने का रहस्योद्‌घाटन किया है। उस ने इस सिलसिले में मुख्य मन्त्री पंडित रविशंकर शुक्ल को दि. १५-१-५५ को टेलीफोन भी किया था। उस ने बताया है कि जगदीशपुर अस्पताल में जब वह अपनी पत्नी का इलाज करा रहा था, उसी समय पादरी श्री ओ. ए. वाल्टनर ने प्रलोभन दे कर ईसाई बन जाने को कहा। ३-२-५३ को वाल्टनर ने अपने खर्च से जांजगीर के पादरी जे. आर. ड्रकसन के यहाँ भेज दिया और ड्रकसन मुझे खर्च देते रहे। दो माह बाद मुझे हस्ताक्षर करने के लिये यह लिखा हुआ कागज दिया गया कि मैं अपनी इच्छा से क्रिश्चियन होता हूँ और बताया गया कि इस कागज को अमेरिका भेजना है। वहाँ से पैसा आने पर २०००) दिया जायगा। इस के बाद ११-४-५३ को मेरा बपतिस्मा ले लिया गया। दिनांक २३-५-५३ को मुझे सराईपाली भेजा गया। वहाँ जाने पर वाल्टनर ने १५०)रु० दिया। एक माह बाद मुझे फिर जांजगीर भेज दिया गया। मेरे चाचा ने डि. का. रायपुर और सेवा समिति सराइपाली को दरख्वास्त दी थी जिसकी तहकीकात भी हुई थी। जांच होने का पता मिश्नरी को लगने से मुझे जांजगीर के ए.डी.सी. श्री जान मसीह के पास दरख्वास्त दिलवा कर पटवारी का काम दिलवा दिया गया ताकि यह पता लगे कि मिश्नरी से मदद नहीं मिलती। मेरे सर्विस में रहने पर भी जे. आर. ड्रकसन बराबर रुपया देते रहे और ५५०) रुपये दे चुके हैं। जब नियोगी जांच कमेटी चांपा आई, मैं सर्विस में था। मुझे बुलाया गया। जब मैं जा रहा था तब ड्रकसन ने रोका और १०००) और देने का आश्वासन देते हुए कहा 'मत जाओ' कुछ तहरीर लिख भेजो वरना हम मर जायेंगे और तहरीर पेश करवा दी। जांच होने के बाद मुझे ३ माह हुए नौकरी से अलग कर दिया गया है और पैसा देना बन्द कर दिया गया है। (हिं. स.)

१५

बाघू (जिला मेरठ) में मिश्नरियों के कृत्य

बाघू मेरठ जिले में एक ग्राम है। उस ग्राम में हरिजनों के कुछ परिवार भी रहते हैं। ऐसा कहा जाता है कि मिश्नरियों ने अनेक प्रलोभनों द्वारा कुछ हरिजनों को ईसाई बना लिया था। बाद को आर्यसमाज के प्रयत्नों से उन में से कई हरिजन परिवार पुनः अपने पूर्व आर्य धर्म में आगये। इसपर मिश्नरी आपे से बाहर हो गये। आर्यसमाज के कुछ कार्यकर्ताओं पर अभियोग लगाकर उन से मुचलके की मांग की गयी। उसी के संबन्ध में अदालत ने जो फैसला किया और जिसका समाचार नई दिल्ली के "हिन्दुस्तान" समाचार पत्र में २७ अगस्त १९५६ का प्रकाशित हुआ है, उस को नीचे दिया जाता है। इससे सर्व साधारण को पता चलेगा कि इसाई मिश्नरी लोग भोले भाले, ग्रामीण, अशिक्षित तथा निर्धन हरिजनों और आदिवासियों को ईसाई बनाने के लिये कैसे-कैसे उपाय काम में लाते हैं:—

बाघू के हरिजन तथा आर्यसमाजी मुक्त

(हमारे संवादाता द्वारा)

यह मानते हुए कि वास्तविक आक्रान्ता ईसाई लोग हैं, उपविभागाधिकारी महोदय, बागपत ने बृहस्पतिवार को ग्राम बाघू, थाना बागपत के लेखा आदि तीन हरिजनों और आर्यसमाज अग्रवाल मंडी के दो कार्यकर्ताओं श्री ज्योतिप्रसाद तथा श्री कर्मवीर आर्य को धारा १०७ भा० द० वि० के अन्तर्गत शांति बनाए रखने के लिए मुचलकों की मांग से मुक्त कर दिया। इन से एक वर्ष के लिए ५-५ सौ रुपये की दो दो जमानतें और मुचलके मांगे गये थे। आरोप यह था कि ये ईसाइयों के साथ विद्वेष रखते हैं और इस से शान्ति भंग होने का खतरा है।

इन व्यक्तियों में से लेखा आदि तीन हरिजन पहले ईसाई थे और फिर हिन्दू धर्म में दीक्षित हो गए थे। यह मामला बाघू के गिरजे के पादरी फ़ादर लुई पीटर की रिपोर्ट पर आरम्भ हुआ था, जिस में तीन घटनाओं का उल्लेख किया गया था। पहली घटना १० मार्च की बताई जाती थी जिस के विषय में कहा गया था कि कर्मवीर ने सिवाल के गिरजे के पादरी को, जो बाघू आया था, तंग किया। दूसरी घटना ११ मार्च की बताई गई थी जिस में कहा गया था कि इन लोगों ने इमरत नाम के एक ईसाई को तंग किया। तीसरी घटना १३ मार्च की बताई गई थी जिस में कहा गया था कि बाघू के गिरजे के मुंशी

एंटोनी को तंग किया गया तथा उसे गाली दी गई। इन में से सिवाल के पादरी गवाही देने के लिए बिल्कुल नहीं आए, एंटोनी ने शपथ पर बयान देने से इंकार कर दिया तथा इमरत वाली घटना का समर्थन किसी ने नहीं किया। पुलिस के थानेदार ने यह स्वीकार किया कि बाघू के एक दो घरों को छोड़ कर शेष सब ईसाई तहसील गाजियाबाद के अन्तर्गत ग्राम मवी में चले गये जहां कि उन को काम मिल गया है। स्वयं लुई पीटर ने स्वीकार किया कि लगभग एक मास से बिलकुल शान्ति है।

मैजिस्ट्रेट महोदय ने अपने निर्णय में प्रकट किया है कि लुई पीटर स्वयं तो हिन्दुओं और मुसलमानों को ईसाई बनाना चाहते हैं और यदि कोई हिन्दू हिन्दुओं से ईसाई धर्म ग्रहण न करने के लिए कहता है तो उसे बुरा लगता है। ऐसी अवस्था में यह निश्चय है कि वर्तमान अभियोग लुई पीटर ने इसलिए आरम्भ कराया कि उसे यह बुरा लगा कि लेखा आदि तीन व्यक्ति पुनः हिन्दू क्यों हो गए। उन्होंने यह अभियोग इसलिए भी चलाया कि रिड़कू ने राज्य सरकार के एक उपमन्त्री से यह शिकायत की थी कि लुई पीटर ने उसके साथ मारपीट की। इस घटना की रिपोर्ट थाने में भी लिखाई गई। इसी कारण रिड़कू तथा उसके पुत्रों के विरुद्ध लुई पीटर को शत्रुता है। पहले लुई पीटर की रिपोर्ट में रिड़कू के एक पुत्र लेखा का नाम अभियुक्तों में दर्ज किया गया था। कई दिन बाद उस रिपोर्ट में लेखा का नाम काटकर रिड़कू के दूसरे पुत्र रतीराम का नाम लिख दिया गया, जिससे रिड़कू तथा उसके दोनों पुत्रों को फंसाया जा सके। आपने यह भी प्रकट किया कि लेखा के मकान में आग लगाने के आरोप में तीन ईसाई सेशन सुपुर्द हैं और दो गूजर युवकों के साथ मारपीट करने में नौ ईसाइयों को दो-दो वर्ष का दंड हो चुका है, जिससे प्रकट होता है कि आक्रान्ता ईसाई लोग ही हैं।

—हिन्दुस्तान, २७ अगस्त, १९५६

१६

ईसाइयों द्वारा हिन्दू मंदिर भस्म : देव-प्रतिमा तोड़ डाली गयी

केरल की कांग्रेसी व प्रजासमाजवादी सरकारों ने सात वर्ष तक रिपोर्ट छिपाई

त्रिवेन्द्रम, १४ दिसम्बर । केरल सरकार ने कल राज्य विधानसभा में पुलिस जांच के उस प्रतिवेदन को प्रस्तुत किया जो सबरी मलई मन्दिर को ईसाइयों द्वारा जलाने के विषय में है । इसे गत सात वर्षों से कांग्रेसी तथा प्रजा समाजवादी सरकारों ने छिपा रखा था । इस मन्दिर में स्थित भगवान् अय्यप्पा की मूर्ति को भी खण्डित कर दिया गया था ।

१६५० के जून मास में सबरी मलई मंदिर के श्री कोविल मण्डल और उसके भण्डार को पूरी तरह जला हुआ तथा विनष्ट पाया गया । राज्य के डिप्टी इंस्पेक्टर जनरल पुलिस (स्पेशल ब्रांच) को इस घटना की जांच के लिए विशेष रूप से नियुक्त किया गया । उक्त प्रतिवेदन में बताया गया है कि ईसाइयों ने इस मंदिर को जला कर नष्ट करने की योजना पहले से पूर्णतया सोच-विचार कर बना ली थी । तदनुसार जानबूझ कर ही यह कुकृत्य किया गया । यहाँ सहस्रों की संख्या में धर्मप्राण हिंदू प्रति वर्ष भगवान् अय्यप्पा की पूजा के लिए आया करते थे । उनके मंत्रोच्चारण एवं कोर्तन की ध्वनि से ईसाई जला करते थे और वे इस मंदिर को अपने मार्ग में—हिंदुओं को ईसाई बनाने में एक बड़ी बाधा समझा करते थे । अत: उन्होंने प्रतिशोध को भावना से ही यह कार्य किया ।

मुख्यमन्त्री श्री नम्बूदरीपाद ने आज विधान सभा में रिपोर्ट पेश की । उन्होंने कहा कि प्रजा-समाजवादी सरकार ने १६५४ में उसे प्रकाशित करने का निर्णय किया था, किन्तु बाद में उन्होंने अपना निर्णय बदल दिया ।

मुख्यमन्त्री ने कहा कि मैं पत्तम थानु पिल्लै सरकार का निर्णय मेज पर पेश कर सकता हूँ ।

जून १६५० में केन्द्रीय तिरुवाँकुर में जंगल से ढकी पहाड़ी पर स्थित सबरी मलई मन्दिर को जला दिया गया था । मंदिर की प्रतिमा को तोड़ दिया गया था ।

—दैनिक वीरअर्जुन, १५ दिसम्बर, १६५७

१७

हिन्दुओं के प्रसिद्ध मन्दिर को नष्ट-भ्रष्ट कर गिरजा बना दिया

दक्षिण भारत में ईसाइयों के घृणित कृत्य

[लेखकः—श्री देवी चन्द एम० ए०, महामन्त्री अ० भा० दयानन्द सालवेशन मिशन, होशियारपुर]

वैसे तो रोमन कैथोलिक मत के अनुयाइयों ने अपने मत के प्रचारार्थ जो रक्तपात किया है वह किसी से छिपा नहीं। अपने आप को सभ्य कहलाने वाले इन लंबे चोगों में विभूषित तथा इन लम्बी दाढ़ी वाले पादरियों ने पोप की आज्ञानुसार १६१४ और तत्पश्चात् १६८१ से १८०८ पर्यन्त के इस दीर्घकाल में जो अत्याचार लूथर के अनुयायी प्रोटेस्टेन्ट लोगों पर रोम, इंगलैंड तथा आयर लैंड में किए हैं, इतिहास उस के लिए साक्षी है। किस प्रकार उन्होंने अपने विरोधियों को लाखों की संख्या में तलवार के घाट उतारा था और उन लोगों को अग्नि की भेंट किया था—इन समस्त हृदय-विदारक दुर्घटनाओं को एक बार स्मरण करने से मानव रोमांचित हो उठता है। गोआ में पुर्तगाल से आए पादरियों ने किस प्रकार वहाँ की हिन्दू जनता को बलात् ईसाई बनाया और किस प्रकार उन के देवी-देवताओं के मन्दिरों तथा अन्य पवित्र स्थानों को नष्ट-भ्रष्ट किया तथा उन के स्थान पर गिरजा घरों का निर्माण किया—इससे उनके चर्च का इतिहास भरा पड़ा है और वहाँ के शासक प्रकट रूप में इस सत्य को स्वीकार करते हैं कि उन्होंने वहाँ अपने मत के प्रचार के लिए तलवार तथा अन्य उपायों का प्रयोग किया है। इन ईसाई प्रचारकों ने मद्रास, केरल तथा दक्षिण भारत के अन्य हिन्दू राज्यों में जिन षड्यन्त्रों तथा निन्दनीय कृत्यों का प्रयोग किया है, उसके मूल में उन्हें अपनी राज्य-सत्ता को प्राप्त करना तथा सुदृढ़ करना ही अभीष्ट था।

अभी निकट भूत में ही केरल की कम्युनिस्ट सरकार ने, वहाँ रोमन कैथोलिक मिशन के पादरियों ने किस प्रकार हिन्दुओं के एक मुख्य तीर्थ-स्थान को नष्ट करने का जो घृणित तथा असभ्य काम किया है उसको प्रकट किया है, जिसके विरुद्ध केरल की हिन्दू जनता गत ८ वर्ष पर्यन्त रोष प्रकट करती रही। केरल सरकार ने श्री के० के० केशव मेनन डिप्टी इन्सपैक्टर जरनल पुलिस को हिंदुओं के इस सुप्रसिद्ध तीर्थ स्थान के मंदिर को अपवित्र करने तथा उसको नष्ट भ्रष्ट करने का उत्तरदायित्व किस पर है इसकी जांच के लिए नियुक्त किया था। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में इस निन्दनीय कार्यवाही के लिए वहाँ के रोमन

कैथोलिक मिशन को दोषी ठहराया है। बम्बई के समाचार-पत्र 'ब्लिट्ज़' ने कुछ मास हुए उक्त रिपोर्ट पर अपना एक नोट प्रकाशित किया था। उसके आधार पर ही मुझे यह लेख लिखने के लिए बाधित होना पड़ा है।

'ब्लिट्ज़' ने लिखा है कि उक्त मंदिर तथा उसके देवता के लिए वहाँ के हिंदुओं में अगाध श्रद्धा की भावना थी, जो ईसाई मिश्नरियों के मार्ग में हिंदुओं को ईसाई मत की दीक्षा देने में एक स्थायी बाधा प्रतीत होती थी। वह उस रुकावट को दूर करना चाहते थे। यह सत्य है कि इतिहास अपने आप को दोहराता है। केरल के रोमन कैथोलिक पादरियों ने सबरीमलई के इस तीर्थ स्थान के मंदिर को नष्ट भ्रष्ट करके तथा उस को अपवित्र करवाने में जो अनुचित तथा असभ्य व्यवहार किया है इससे उनके ऐतिहासिक अत्याचारों तथा कुकृत्योंमें एक और अध्याय जुड़ गया है। ऐसा करने में उनका उद्देश्य केवल यही था 'न होगा बांस और न बजेगी बांसुरी'—जब मन्दिर और उसके देवता को ही समाप्त कर दिया जाएगा तो वहाँ कौन पूजा के लिए आएगा। इस देव स्थान को नष्ट भ्रष्ट करवाने के लिए इन दम्भी इसाईयों ने दुश्चरित लोगों तथा चोरों द्वारा भी काम लिया है। इस सरकारी लंबी रिपोर्ट में श्री मेनन ने ईसाई मिश्नरियों की निन्दनीय कार्यवाही का कारण वर्णन करते हुए स्पष्टतया यह भी लिखा है कि उक्त तीर्थ के चारों ओर का जंगली प्रदेश रोमन कैथोलिक ईसाईओं के बाग-बगीचों से घिरा हुआ था और उन्हें लाखों की संख्या में हिन्दुओं के इस तीर्थ स्थान पर एकत्रित होना असहनीय प्रतीत होता था। वह उसे अपने मत के प्रचार के मार्ग में रोक और भारी बाधा समझते थे। इसी कारण उन्होंने सदैव के लिए उसे समाप्त कर देने का दृढ़ निश्चय किया था और अत्यन्त दुख की बात यह है कि प्रदेश-कांग्रेस के प्रमुख स्तम्भ इस घृणित तथा असभ्य कार्य में उन लोगों की पीठ पर रहे।

डिप्टी इंस्पेक्टर जनरल पुलिस ने अपनी इस रिपोर्ट में ईसाई पादरियों की इस अत्यन्त घृणास्पद तथा निन्दनीय कार्यवाही की निन्दा करते हुए इस सत्य को भी प्रकट किया है कि उक्त देवस्थान के निकट ही इन लोगों ने अपना कोई पुराना गिरजा इसलिए बना लिया, जिससे हिन्दु यात्रियों को मार्ग में ही बलात् उसकी ओर आकर्षित किया जा सके और उन्हें उस अपने मन्दिर अय्याप्पा की ओर जाने से रोका जाए।

वर्तमान समय जिसमें हम निकल रहे हैं प्रकाश का युग कहा जाता है। इसके अतिरिक्त अब भारत की गणना एक स्वतन्त्र प्रजातन्त्र देशों में हो रही है और इस देश में हमारा अपना शासन है। मुझे अब यह देख कर अत्यन्त खेद तथा आश्चर्य होता है कि इस समय भी विदेशी ईसाई पादरियों

को इस प्रकार की अत्यन्त अनुचित तथा निन्दनीय कार्यवाहियों से हमारी सरकार रोक नहीं सकती और उन्हें अब यह साहस प्राप्त है कि वह एक प्रान्त में एक हिन्दू देवस्थान को अपमानित करके उसके अस्तित्व को मिटा सकते हैं और भोले-भाले हिंदुओं को बलात्, गिरजाघरों में लाकर तथा प्रलोभन देकर ईसाई बना सकते हैं और भारत सरकार उसकी कोई नोटिस नहीं लेती।

मैं केरल की कम्युनिस्ट सरकार से भी यह पूछना चाहता हूँ कि उसने भी मेनन की रिपोर्ट पर उन ईसाई मिशनरियों के विरुद्ध क्या कार्यवाही की है जो सबरीमलई में अय्याप्पा मन्दिर को नष्ट-भ्रष्ट करने के दोषी ठहराए गए हैं। सरकार ने इस प्रकार की घटनाओं की जिनसे भारतीय हिंदुओं की भावनाओं को भारी ठेस लगती है, रोकथाम के लिए यदि शीघ्र कोई प्रभावशाली पग न उठाया और अपराधी पादरियों को उचित दण्ड न दिया गया तो न केवल भारत के हिंदू इस के विरुद्ध तीव्र आंदोलन करने के लिए बाधित होंगे प्रत्युत विदेश में रहने वाले हिंदू भी रोष प्रकट करने में उनके साथ होंगे।

१८

अमेरिकी मिशनरियों की आपत्तिजनक कार्यवाहियां

छोटा नागपुर में ५ हजार इसाई प्रचारक सक्रिय

रांची २६ जुलाई। छोटा नागपुर के पहाड़ी जिलों में ईसाई मिशनरियां खुले रूप से अराष्ट्रीयता का प्रचार कर रही हैं। इन मिशनरियों को मुख्य रुप से अमेरिकी सहायता मिलती है।

धर्म प्रचार की आड़ में यह मिशनरियां इस क्षेत्र में सामाजिक और धार्मिक साम्राज्यवाद की स्थापना कर रही हैं।

ईसाई मिश्नरियां दवा बांट कर तथा शिक्षण-संस्थायें खोल कर भोली-भाली जनता के हृदय में अपना गहरा स्थान बना रही हैं। इनकी भारत-विरोधी कार्यवाहियां बिहार के सिंहभूम, हजारीबाग तथा रांची जिलों में चल रही हैं।

छोटानगापुर में पड़े अकाल का लाभ लेते हुए अमरिकी घी, दूध पाउडर तथा दवायें बांटकर इन मिश्नरियों ने भारी संख्या में लोगों को ईसाई बना लिया है।

पता चला है कि इस क्षेत्र में आजकल कुल ५ हजार ईसाई प्रचारक ईसाई बनाने का कार्य रक रहे हैं।

पटना और रांची में दो बड़े केन्द्र हैं जहाँ कि उन्हें जनता को बहकाने का प्रशिक्षण दिया जाता है। और भी कई केन्द्र शीघ्र ही खुलने वाले हैं।

धर्मप्रचार कुछ और है और धर्म की आड़ में राजनीतिक चालें चलना बिलकुल असह्य बात है। इन मिश्नरियों की हरकतों का प्रमाण नागा पहाड़ियों, सोमा एजेंसी तथा नेपाल में देखा जा चुका है और अब उन्होंने छोटा नागपुर को भारत-विरोधी कार्यवाही के लिये चुना है।

—वीरअर्जुन २७ जुलाई, ५८

१६

केरल में "ईसाइयों की निजी सेना"

कम्यूनिस्ट सरकार ने केन्द्र को सूचित कर दिया

त्रिवेन्द्रम, ६ जनवरी। केरल के मुख्य मंत्री श्री शंकरम् नम्बूदरीपाद ने आज यहाँ एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि, राज्य सरकार ने केरल में "क्रिस्टोफर" संगठन की विद्यामानता के बारे में केन्द्रीय गृह-मंत्रालय को सूचित कर दिया है।

इस प्रश्न पर कि आया राज्य सरकार इस संगठन पर प्रतिबन्ध नहीं लगा सकती, उन्होंने कहा कि राज्य सरकार को ऐसा अधिकार प्राप्त है, परन्तु वह अभी यह करना नहीं चाहती।

कानून-मंत्री श्री कृष्ण अय्यर ने विधान सभा के पिछले अधिवेशन में कहा था कि इस संगठन को एक निजी सेना के रूप में प्रशिक्षण दिया जा रहा है और यह एक राष्ट्रीय खतरा है।

मुख्य मंत्री से पूछा गया कि आया सरकार को मजबूत बनाने के लिए मुस्लिम लीग जैसी अन्य किसी पार्टी के साथ गठजोड़ करने का कोई सुझाव है।

उन्होंने उत्तर दिया कि अभी ऐसा सुझाव सर्वथा अयथार्थपूर्ण है

—दैनिक वीर अर्जुन, ७ जनवरी १९५९

२०

केरल में ईसाई अपनी 'सेना' तैयार कर रहे हैं

विधान सभा में रहस्योद्घाटन

त्रिवेन्द्रम, २२ दिसम्बर। कल राज्य विधान सभा में सदस्यों ने 'क्रिस्टोफर संगठन' की गतिविधियों के बारे में प्रश्नों की झड़ी लगा दी।

कानून-व्यवस्था के मंत्री श्री कृष्ण अय्यर ने एक कम्युनिस्ट सदस्य को बताया कि सरकार इस संगठन की गतिविधियों पर नजर रखे हुए हैं। संगठन गैर-सरकारी फौज की तरह है। सरकार विचार कर रही है कि क्या पग उठाये जाएं। इस संबंध में केंद्र को सूचित किया जायगा।

मंत्री महोदय ने कहा कि यह 'राष्ट्रीय खतरा' है।

आपने बताया कि प्राप्त सूचनाओं के अनुसार कोट्टायम जिला में १४,५९८ क्रिस्टोफरों का दल है। त्रिचूर में लगभग अढ़ाई दर्जन हैं। इन स्वयं-सेवकों को पवित्र गिरजाघरों के स्थानों में भूतपूर्व सैन्य अधिकारियों द्वारा प्रशिक्षण दिया जा रहा है। बिशप आर्थिक सहायता देते हैं। स्वयंसेवकों को लाठियां भी दी गयी हैं जो आवश्यकता पड़ने पर शस्त्र का काम दे सकती हैं।

यह पूछे जाने पर कि क्या मंत्री महोदय अपने कथनों को प्रमाणित कर सकते हैं, श्री अय्यर ने कहा कि मैं सदन के सम्मुख सभी विवरण रखने के लिये तैयार हूँ।

—दैनिक वीर अर्जुन, २३ दिसम्बर १९५७

२७

मिश्नरियों को मिलनेवाली विदेशी सहायता पर नियंत्रण रहे,

आदिवासी समाज सुधार सभा के अध्यक्ष श्री खलखो का वक्तव्य

रांची ७ मई। छोटानागपुर आदिवासी समाज सुधार सभा के अध्यक्ष श्री राम नारायण खलखो ने लिखा है कि मुण्डा समाज के नेता श्री बिरसा मुण्डा तथा मैं बंदगांव के ईलाके में गये। वहाँ के लोगों से बातें करने पर मालूम हुआ कि हमारे समाज को मजबूरी और गरीबी से तड़पते हुए देख

कर अनुचित लाभ उठाकर चावल और दूध का प्रलोभन देकर लगभग १२ गांवों में ३०० लोगों को ईसाई धर्म ग्रहण करने के लिये कैथोलिक मिशन वालों ने प्रेरित किया । सारे बिहार में अकाल पड़ा हुआ है । छोटानागपुर आदिवासियों की भूमि होने के कारण मिश्नरियों ने प्रचार-युद्ध की तरह धर्म-युद्ध छेड़ रखा है । मिश्नरियों के पास अपार धन-राशि होने के कारण हम अपने समाज की रक्षा करने में असमर्थ हैं । उनसे रक्षा करने का एक मात्र उपाय यही है कि प्रांतीय तथा केन्द्रीय सरकार विदेशों से मिलने वाली सहायता पर अपना अधिकार रखे और मिश्नरियों पर कड़ी निगरानी रखे ।

३०० मुण्डा कैसे कृस्तान हुए:-

बन्दगांव ईलाके में लगभग १४ गांवों में जहाँ थोड़ी थोड़ी संख्या में आदि-वासी ईसाई हो गये हैं, मिश्नरियों ने सेवा के नाम पर दूध और चावल बांटना शुरू किया और साथ साथ मिशन अहाता में तालाब खुदाई का काम शुरू किया गया । गरीब आदिवासी जब मिश्नरियों के पास दूध, चावल और काम के लिये आये तो मिश्नरियों ने कहा कि यह सब केवल ईसाइयों को मिलता है, जो ईसाई नहीं हैं उनको नहीं मिलता । यदि तुम लोग लेना चाहते हो तो ईसाई धर्म कबूल करो । इस पर भूखे आदिवासियों ने मिश्नरियों को आश्वासन दिया । मिश्नरियों को विश्वास नहीं हुआ । अतः उन लोगों से पादरियों ने धर्म की शिक्षा देने के लिये १५ दिनों में कैम्प खोल कर उसमें आने के लिए कहा । उस शिविर में तापेंगसरा, मटागढा, मेरोम गुट्ठ, मुरूमबुरा हतनादआ, रचागुट्ठ, लुम्बाय, दिगी, लोगफटा, जलपाई, बोगाबुरू, खरवा, टोकाद, कोडाकेल आदि गांवों के गरीब मुण्डा लोगों ने भाग लिया और १५ दिनों की धर्म की शिक्षा लेकर पहले जत्थे के रूप में वापस चले गये । दूसरा जत्था पुनः आया और उसे भी धर्म की शिक्षा दी जाने लगी । इस बीच हिन्दू समाज में कुछ आतंक फैला और अधिकारियों तक आवाज पहुँचाई गई । खूंटी तथा चाईवासा के एस० डी० ओ० घटना-स्थल पर पहुँचे तथा चाईवासा के एस० डी० ओ० ने राहत का काम प्रारम्भ कर दिया । मिश्नरियों को जब इनके पहुँचने का समाचार मिला तो धर्म-परिवर्तन समारोह का जो शिविर था, उसे उन्होंने तोड़ दिया और लोगों को वहाँ से भगा दिया ।

इस सम्बन्ध में पूरी जानकारी के लिये मैं चेष्टा कर रहा हूँ, लेकिन अनुमान है कि इन लोगों ने करीब ३०० लोगों का धर्म-परिवर्तन किया । जांच के सिलसिले में मिश्नरियों के कार्य के जो उदाहरण मिल सके हैं मैं उन्हें प्रस्तुत कर रहा हूं:—१—लुम्बा ग्राम में जगन सिंह मुण्डा के लड़के

राम मुण्डा को पढ़ाने के लिये बन्दगांव के पादरी चाईवासा के लुपुंगुटू स्कूल ले गये। वहाँ उसे अपने पिता की इच्छा के विरुद्ध ईसाई मत की शिक्षा दी गई। उसका नाम राम मुण्डा से बदल कर निकोलस रखा गया।

२— मेरोम गुटु के विसुन मुण्डा की लड़की रन्दनी मुण्डाईन तथा सनिका मुण्डा की लड़की सनी मुण्डाईन तथा कटावा गांव के मंगरा मुण्डा की लड़की चम्पु मुण्डाईन को भी ईसाई बनाने का प्रयास पादरी कर रहे हैं। उपर्युक्त लड़कियां बन्दगाँव के मिशन स्कूल में पढ़ती हैं। लड़कियों के अभिभावक स्थानान्तरण प्रमाण पत्र पादरी से मांगते हैं पर वे उन्हें नहीं देते। साथ साथ लड़कियों को कुटुम्ब से मिलने भी नहीं दिया जाता।

इन सब बातों को देखने से मालूम होता है कि आदिवासियों का रक्षक शायद संसार में कोई नहीं है। सरकार से अनुरोध है कि उच्चपदस्थ अधिकारियों को भेज कर उपर्युक्त घटनाओं को जांच करायें और बिना जिलाधीश की आज्ञा के धर्म-परिवर्तन को अवैध घोषित करें तथा शिक्षण-संस्थाओं को मिश्नरियों के हाथ से ले लें।

आर्यावर्त, डाक सस्करण, ता० ९-५-५८

२२

आदिवासी क्षेत्रों में विदेशी मिश्नरियों द्वारा ईसाईस्तान बनाने की तैयारी

"हे ईसामसीह, हमारा खोया हुआ राज्य हमें वापस दे"

श्री उमाशंकर शुक्ल

आजकल देश में ईसाई मिश्नरियों द्वारा हिंदुओं को धर्म-परिवर्तन करने के लिये बाध्य किया जा रहा है। हाल ही में मध्य प्रदेश के सुप्रसिद्ध रचनात्मक कार्यकर्ता और महान संत तुकड़ो जी महाराज ने मध्यप्रदेश के आदिवासी क्षेत्र का दौरा किया है और वहां की परिस्थिति का सूक्ष्म निरीक्षण किया है। उन का यह दृढ़ विश्वास है कि ईसाई मिश्नरियों द्वारा आदिवासियों का जो धर्मान्तर किया जा रहा है, उसका उद्देश्य धार्मिक न होकर राजकीय है। धर्म-प्रचार और मानव-सेवा केवल बहाना है। आगामी पाँच दस सालों में भोले भाले आदिवासियों को ईसाई बना कर उन के संख्या बल पर राजसत्ता हस्तगत करने का यह एक राजकीय व्यूह है। "झारखंड" के वहाने 'ईसाई खंड'

प्रस्थापित करने का यह प्रयत्न है। कुछ चर्चों में प्रार्थना के बाद "हे ईसामसीह, हमारा खोया हुआ राज्य हमें वापिस दे" इस प्रकार की प्रार्थना की जाती है। तुकड़ोजी ने एक महत्व पूर्ण प्रश्न पर समस्त भारत की जनता और सरकार का ध्यान आकर्षित किया है और ऐसी आशा प्रकट की है कि राजनीतिज्ञ और समाज-सेवक पुरुष इस दशा में सावधान हो जाएं और उचित कदम बढ़ाएं, ताकि देश में आदिवासियों को विधर्मी न बनाया जा सके।

ईसाईस्तान का नया खतरा

संत तुकड़ोजी महाराज ने सरगुजा, रामगढ़, महेन्द्रगढ़, चांदा, बिहार, महाराष्ट्र, नासिक और अन्य विभागों का निरीक्षण किया है और उन्हों ने जो अपने अनुभव बताये हैं वे आंख खोल देने वाले हैं। हमारी सरकार को इसाई मिश्नरियों की चालाकी से सतर्क हो जाना चाहिए और उन की कार्यवाहियों पर नजर रखनी चाहिए। वरना एक दिन ऐसा आएगा जब इस देश में ईसाईस्तान की मांग होने लगेगी और देश को एक नये खतरे का सामना करना पड़ेगा।

तुकड़ोजी ने वहाँ देखा कि हर इतवार को आदिवासी लोग चर्च में जाते हैं और अपने साथ प्रार्थना के लिए जाते समय एक मुर्गी, कटोरा भर चावल और दो पैसे ले जाते हैं। कुछ आदिवासियों ने तुकड़ों जी से कहा भी कि "महाराज जी, हमें ईसाई मिश्नरियों से बचाइये"।

आधी जनसंख्या ईसाई बन चुकी

सरगुजा जिले में ८० से ९० प्रतिशत लोग आदिवासी हैं। इन में से ३०-४० प्रतिशत लोगों को ईसाई बना लिया गया है। इस क्षेत्र में जो ईसाई प्रचारक आये थे, वे रांची की तरफ के हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इस विभाग में धर्म-प्रसार और राजनीतिक विषयक सूत्र रांची से मिलते है। जशपुर से रांची केवल ११० मील की दूरी पर है, और विहार प्रान्त की हद १२ मील पर है। जशपुर का अधिक संबंध रांची से रहता है। साधारणतः पचास वर्ष पुराने चर्च यहां पाये जाते हैं। इस से यह सिद्ध होता है कि गत पचास सालों से ईसाई लोग अपना काम कर रहे हैं, और भी अनेक स्थानों पर चर्च बने हुए हैं। इन चर्चों में पाठशाला, छात्रालय, कृषि आदि की व्यवस्था है। धर्म-जयगढ़ विभाग के और धवलगांव के ग्रामों में मिश्नरियों का कार्य बहुत तेजी के साथ बढ़ रहा है। अब इन की दृष्टि अम्बिकापुर, रामगढ़, धर्मजयगढ़ और शहरी प्रदेशों की ओर आकर्षित हो रही है।

धर्म-परिवर्तन के ढंग

धर्म-परिवर्तन के लिये ये लोग तरह-तरह के हथकंडे काम में लाते हैं। औषधि, सहायता, शिक्षा-व्यवस्था, कर्ज तथा हिंदू देवी-देवताओं के नाम से बहकावा देकर वे आदिवासियों को ले जातें हैं। कर्ज की रकम निर्धारित समय पर नहीं आने से वे लोग आदिवासियों की चोटियां काट लेते हैं। बस यही परिवर्तन का चिन्ह समझ कर उन्हें ईसाई बना लिया जाता है।

तुकड़ो जी महाराज ने एक ईसाई धर्म-प्रचारक से पूछा कि आप धर्मान्तर क्यों करते हैं? तो उस ने जवाब दिया कि ईसा के आदेशानुसार बंधुभाव बढ़ाकर सेवा करने के हेतु हम यह धर्म-प्रचार कर रहे हैं। करीब तीस चालीस साल से ये विदेशी ईसाई प्रचारक अपना काम कर रहे हैं। वे अपने घर भी नहीं गये और आजीवन धर्म-प्रचार ही की प्रतिज्ञा लेकर भारत में डटे हुए हैं।

अधिकारी भी ईसाई

इस क्षेत्र में यह देखा जाता है कि वहाँ के अधिकारी भी ईसाई होते हैं। दारोगा, पटेल, पटवारी आदि भी ईसाई हैं और इन लोगों से ईसाई मत के प्रचार में बहुत बड़ी सहायता मिलती रहती है। विदेशी मिश्नरी आदिवासी लोगों में प्रत्यक्ष प्रचार नहीं करते, किन्तु आदिवासी लोगों ही को प्रचारक बना कर अपना काम कराते हैं। पटवारियों से बहुत सहायता इन्हें मिलती है।

७० हजार ईसाई

इस क्षेत्र के ९० हजार प्रमुख आदिवासी लोगों में से सत्तर हजार आदिवासी ईसाई बन चुके हैं। यह काम बीस साल में हुआ है। जशपुर क्षेत्र में गत दो तीन सालों में १७ हजार आदिवासियों ने ईसाई धर्म स्वीकार किया है। वहाँ की लोक-संख्या दो लाख पचपन हजार है। इसमें से दो लाख आदिवासी ईसाई बन चुके हैं। १९५१ में ईसाइयों की संख्या केवल एक लाख थी, किन्तु अब तो यह संख्या दो तीन साल ही में दुगनी हो गयी है।

जबरन दान

यह भी पता चला है कि चूंकि सरकारी आज्ञा विना वे भूमि प्राप्त नहीं कर सकते, अतः वनजातियों के नाम से भूमि लेकर, उन्हें ईसाई बनाकर, उन्हीं से जबरन दान स्वरूप वे भूमि प्राप्त कर लेते हैं।

जैसे थे वैसे

ईसाई बनने के बाद आदिवासी लोगों में कोई फरक नहीं दिखाई देता। आदिवासी ईसाई प्रचारक को प्रतिमास १० रुपया वेतन मिलता है, पर वही

काम करने वाले अमेरिकन प्रचारक को प्रतिमास चार सौ रुपया वेतन मिलता है। जशपुर में धर्मप्रचारार्थ प्रतिवर्ष बीस लाख डालर खर्च किया जाता है।

आंग्ल आदिवासी निर्माण

इस क्षेत्र में कुछ गौरवर्ण के आदिवासी बालक दिखायी देते हैं। इसमें विदेशी ईसाई धर्म-प्रचारकों की दो मनोवृत्तियां दिखायी देती हैं। एक यह कि आदिवासी युवतियों के प्रति इन धर्म-प्रचारकों का अनैतिक व्यभिचार और दूसरी यह कि इस प्रकार मिश्रित प्रजोत्पत्ति कर एंग्लोइंडियन के समान ऐंग्लो-आदिवासी जाति निर्माण करने की नीति।

जशपुर विभाग में ईसाइयों के ५०० प्रचारक, २० महिलाएं और १५ फादर्स हैं। लगभग बीस पच्चीस धर्मप्रचारक जो अमेरिकी हैं, धर्म-प्रचारक का काम कर रहे हैं। इनका सबसे प्रमुख केंद्र रायगढ़ ज़िले में कुनकुरी में है। इसके अतिरिक्त गिना, बिहार, मोनन, पुसकुटरी, नपकरा, अंबकोना, लुटेडेग में उपकेन्द्र हैं। पांच गावों में एक बेल्जियन चर्च है।

सरकार नीति घोषणा करे

संत तुकड़ो जी महाराज ने जो कुछ वहाँ देखा है, उसका वर्णन ऊपर किया गया है। अब सवाल यह है कि हमारी सरकार इस बारे में क्या कर सकती है। क्या वह आदिवासियों को ईसाई बनाने देना चाहती है या ईसाई धर्म-प्रचारकों पर रोक लगाना चाहती है? आज देश के कोने-कोने में ईसाइयों के कारनामों की कहानियां सुनने में आ रही हैं और पार्लमेंट में भी इस पर व्यापक चर्चा हो चुकी है। सरकार को अपनी नीति तुरंत ही घोषित करनी चाहिए। अन्यथा देश के लिये इसका बहुत ही घातक परिणाम होगा। आज जो चीज हमें छोटी सी दिखायी देती है, वही आगे चलकर बड़ी हो सकती है। अगर चुपचाप रहे तो ईसाई प्रचारकों के हौसले बढ़ जाएंगे और अपना काम बराबर जारी रखेंगे। वे लोग हिंदुओं के धर्म-ग्रन्थों की निन्दा करते हैं। आसाम में भी आदिवासियों को ईसाई बनाया गया है। हिंदू धर्म पर शुरू ही से संकट आ रहा है। मुसलमानों ने अपने समय में हिंदुओं को मुसलमान बनाया और अंत में उन्हें पाकिस्तान मिला और ईसाई बनना जारी रहा तो हो सकता है कि इस देश में ईसाईस्तान भी आगे चलकर बनाना पड़े। भविष्य बहुत ही खतरनाक है। कल्पना करने ही से हमारे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। हमारी सरकार को इधर अवश्य ध्यान देना चाहिए। इसकी बराबर जांच होनी चाहिए।

स्वराज्य और स्वदेश को धोखा

संत तुकड़ो जी ने स्पष्ट कहा है कि मैं स्वयं मानवतावादी हूं और सभी धर्मों का आदर करने की मेरी इच्छा है, परंतु किसी का धर्म लोभ, दबाव या डर दिखा कर बदलना और अनपढ़ लोगों को झूठा मार्गदर्शन कर उनके धर्म से उन्हें वंचित करना मैं घृणास्पद समझता हूँ। इसी प्रकार एक देश से दूसरे देश में आकर वहां की जनता को राष्ट्रद्रोही बनाना मैं निंदनीय मानता हूँ। हमारी सरकार यद्यपि किसी एक धर्म को नहीं मानने वाली है, वह सभी धर्मों का आदर करती है, फिर भी स्वराज्य और स्वदेश को धोखा देने वाली हलचलों को बंद करना सरकार का परम कर्तव्य है। जनता को भी इस ओर ध्यान देना चाहिए और आदिवासियों की सेवा में लग जाना चाहिए।

समाज सेवकों की आवश्यकता

संत तुकड़ो जी महाराज का "गुरुदेव सेवा मंडल" चाहता है कि वह आदिवासियों की सेवा करे। परन्तु अकेले "गुरुदेव सेवा मंडल" द्वारा ही यह काम पूरा नहीं होगा। इसलिए संत तुकड़ो जी महाराज ने समाज-सेवकों और अन्य संस्थाओं से निवेदन किया है कि इस काम में वे सहयोग दें।

जो संस्थायें काम करना चाहें वे संत तुकड़ो जी से संबंध स्थापित कर सकती हैं।

"जनसत्ता"—१५—४—१९५४

२३

बिहार के राज्यपाल को आदिवासियों का प्रार्थना-पत्र

निम्मलिखित प्रार्थना-पत्र छोटा नागपुर में आदिवासियों की ओर से बिहार के माननीय राज्यपाल की सेवा में २८ अगस्त, १९५६ को दिया गया।

माननीय श्रीमान् आर० आर० दिवाकर, राज्यपाल,

बिहार राज्य।

माननीय महोदय,

आपकी सेवा में छोटानागपुर के आदिवासियों की ओर से मैं ने ता० २२/८/५६ को एक प्रतिनिधि-मण्डल लेकर आपका दर्शन किया और सरकार द्वारा संभावित आदिवासियों के उत्थान विषयक बातों पर प्रकाश डालते हुए

आप से निवेदन किया। आप ने सारी बातों को सुनने की महती कृपा की और हमारे कष्टों को केन्द्रीय सरकार तक पहुंचाने का वचन देते हुए मुझे आज्ञा दी कि मैं लिखित रूप में अपने विचारों को आप की सेवा में अर्पण करूं। आपने उस पर विचार कर हमारी आवाज को केन्द्रीय सरकार तक पहुंचाने का भी आश्वासन दिया। उसी के आधार पर आपकी सेवा में निम्नलिखित पंक्तियां उपस्थित कर रहा हूँ। आशा है आप सहानुभूतिपूर्वक विचार कर हमारी सहायता करेंगे।

हिन्दुस्तान के सैकड़ों वर्षों से गुलाम होने के कारण भारत का सामाजिक ढाँचा बदल गया। हिन्दुस्तान की जनता आदिवासी, हरिजन और सवर्ण तीन भागों में विभक्त हो गई। जिन की धार्मिक चेतना प्रायः लुप्त हो गई थी और जो सवर्ण हिन्दुओं की दृष्टि में नीच और पतित देखे जाने लगे थे, उनको विदेशी सत्ता द्वारा हिन्दू समाज से अगल कर विधर्मी बनाया जाने लगा। इने गिने मुसलमानों ने अपनी संख्या करोड़ों की कर ली और अजादी की लड़ाई सफल होने के साथ साथ हिन्दूस्तान का विभाजन हुआ और दो राष्ट्रों का निर्माण हुआ—भारत और पाकिस्तान।

इधर दो सौ वर्षों से ईसाई मत वालों का साम्राज्य कायम हुआ और उन लोगों का बल पाकर हिन्दूस्तान को सदा के लिये गुलाबी की जंजीरों में जकड़ कर रखने की नीयत से ईसाई धर्म के पुरोहितों का जाल बिछाया गया। छोटानागपुर में ईसाई लोगों का इतिहास सौ साल का इतिहास है और सौ साल में इन लोगों ने हरिजनों और आदिवासियों को नाना प्रकार के प्रलोभनों में डालकर लाखों की तायदाद में ईसाई बना कर उन्हें देश का दुश्मन बना दिया।

जहां तक रांची का प्रश्न है, यहां मिशनवालों का इतिहास १८४५ ई० से प्रारम्भ होता है। सन् ५७ के स्वतन्त्रता संग्राम के पश्चात् ५० वर्षों में मिशनवालों ने राँची जिला में कमाल कर दिखाया। १८६० ई० में केवल १२२७ आदिवासी ईसाई हुए थे। पर आठ साल के बाद इनकी संख्या बढ़कर १११०८ हो गई। १८८१ में यह संख्या ३३३६५ और १९११ में १७७४७३ हो गई। १९३१ में यह संख्या ५४३००० हो गई। १९४१ और १९५१ में ईसाइयों को भी सरकार ने आदिवासियों में मान लिया। इसलिये यह कहना मुश्किल है कि इनकी संख्या क्या है। सेंसस रिपोर्ट के अनुसार सन् १९३१ ई० में रांची की आबादी १५६७१४९ थी जिसमें:—

आदिवासी गैर-ईसाई	३६८०००
ईसाई	५४३०००

पिछड़ी जातियां हिन्दू	८००००
मुसलमान	६३०००
अन्य हिन्दू	५०३०००

१९४१ ई० की जन-गणना में ईसाई और गैर-ईसाई के साथ पिछड़े हुओं को मिलाकर आदिवासियों की संख्या ११७३०४२ और कुल आबादी १६७५४०० हुई। १९५१ में आबादी बढ़कर १८६१२०७ हुई जिसमें आदिवासी ११२५८०२ और गैर आदिवासी ७३५४०५ हैं। २० वर्षों में यहां को आबादी का पांचवां हिस्सा बढ़ा। इस प्रकार यदि ईसाइयों की संख्या जन्म के आधार पर देखा जाय तो इसी क्रम से ५४३००० से बढ़ कर ६६१००० होनी चाहिये। किन्तु इधर २० वर्षों में ईसाई मिश्नरियों द्वारा आदिवासियों को ईसाई बनाने के जो उद्योग हुए हैं उनके फलस्वरूप ईसाइयों की संख्या कितनी बढ़ी है, इसका पता मिशनवालों के रजिस्टर से ही लग सकता है।

मिशनवालों ने हिन्दूस्तान की गुलामी को मजबूत करने के लिये सरकार और विदेशियों की पूंजी से मुख्यत: (१) अस्पताल (२) शिक्षा और (३) आर्थिक अवस्था में सुधार अपने हाथों में लिये। इन लोगों ने हमारी अशिक्षा और मूर्खता का लाभ उठा कर ईशु मसीह को ही स्वर्ग, शिक्षा, नौकरी और दवा दिलाने वाला बता कर हमको हमारी संस्कृति और राष्ट्रीयता से अलग किया और सब से बड़ी बात यह हुई कि वे देश-द्रोही होकर स्वराज्य की बात तो कहां तक करेंगे, स्वराज्य डुबाने वाले सिद्ध हुए।

देश में करोड़ों आदिवासियों और पिछड़ी जातियों की अवस्था को देख कर ही बापू ने अपने कार्य-क्रम में आदिवासियों की सेवा के लिये १४ वां प्रश्न रखा था और श्री ठक्कर बापा जैसे कर्मठ नेता को इस कार्य में सौंपा था।

आज सरकार लाखों करोड़ों रुपये आदिवासियों के उत्थान के लिये खर्च कर रही है। साथ साथ नेहरू सरकार ने ईसाइयों को भी आदिवासी मान कर हमारे सामने यह समस्या रख दी है कि हम सरकार द्वारा दी गई सहायता का उपयोग किस प्रकार करें? जिस प्रकार मृतकों के जलूस में डोम लोगों के लिये पैसे की लूट होती है और उसमें जो चालाक और तगड़े होते हैं वेही ज्यादा पैसा पाते हैं, उसी प्रकार ईसाई हमारे लाभों को हड़प लेते हैं और हम लाभ से वंचित रह जाते हैं!

आदिवासियों की और ईसाइयों की संस्कृति में जमीन आसमान का अन्तर है। हमारा भगवान् सिंगबोंगा, धर्मेश, देशवाली, सरना आदि हैं। हम कर्मा, होली, सोहराई मानते हैं। ईसाई हमारे देवताओं को शैतान और प्रसाद को शैतान का जूठा बताते हैं और अपने ईशु को सहाय समझते हैं। हमारे गांव

में अखाड़े के साथ धुमकुरिया होती हैं। धुमकुरिया का अर्थ धर्मकुरि या धर्मकुटी है। वहाँ स्त्रियों का प्रवेश सख्त मना है। वहाँ भविष्य में जीवन-संग्राम से मुकाबला लेने के लिये पुराने युवक नये युवकों को शिक्षा देते हैं। अखाड़े में स्त्री-पुरुष, भाई-बहन सभी लोग इकट्ठा होकर नाचते हैं और त्योहार मनाते हैं और शादी-विवाह अपनी ही जाति में करते हैं।

ईसाइयों का इसके विपरीत होता है। वे अन्तर्जातीय विवाह करते हैं। खानपान उनका अन्तर्जातीय होता है। उनका नाच-गान और रहन-सहन, बाजा-गाजा सारा का सारा ईसाइयत से भरा रहता है।

सरकार ने हमारी संस्कृति को ऊंचा उठाने के लिये एक बोर्ड बनाया है। उसका नेतृत्व ईसाई को ही मिला है। ईसाई चुस्त और चालाक होते हैं। वे संवसार लोगों को यह दिखाते हैं कि सरकार ईसाइयों को सहायता देती है इसलिये वे भी ईसाई होकर लाभ उठावें। ईसाई सरकार की आंखों में धूल झोंक कर इस प्रकार हमारे ही नाम को बेंच कर सरकार से रुपये ठगते हैं और हम और सरकार दोनों को अन्धकार में रखते हैं।

आपको मालूम होगा कि श्री जुलियस तिग्गा साहब धुमकुरिया स्कूल का नाम रखकर हमारी संस्कृति की रक्षा करने का ढोंग रचते हैं। सरकार इसी धुमकुरिया स्कूल को हमारी संस्कृति की रक्षा करने के लिये पर्याप्त रकम देती है। याने मुद्दई की ओर से मुद्दालेह बहस करे, ऐसी बात होती है।

अत: श्रीमान् से निवेदन है कि हमारी संस्कृति और ईसाइयों की संस्कृति में कोई मेल नहीं। किसी भी व्यक्ति के ईसाई हो जाने के साथ साथ उनकी जात समाप्त हो जाती है।

"अनटचेबिलिटी ऐक्ट" को देखने से पता चलता है कि इस ऐक्ट से ईसाई और मुसलमान बरी हैं, लेकिन आदिवासी को हिन्दू माना गया और उन पर यह कानून लागू है। इससे यह पता चलता है कि सरकार भी जो आदिवासी ईसाई हो गये हैं उन्हें हिन्दू कानून के दायरे से बाहर रखने लगी है। इसलिये सरकार से अनुरोध है कि संवसार आदिवासियों और ईसाई आदिवासियों में सभी विषयों में वह यही विचार धारा अपनावे।

छोटानागपुर में जितने आदिवासी अपने पुरखों के धर्म को छोड़कर ईसाई हुए हैं उनमें प्रत्येक की देखभाल मिशन से होती है और हमारा सरकार के सिवा कोई भी देखभाल करने वाला नहीं। फिर हम को और उनको एक ही लाठी से हांकने से हम बहुत ही घाटे में रहते हैं।

अंग्रेजी शासनके समय आदिवासियों और ईसाइयों के हक अलग अलग सुरक्षित

थे। जो आदिवासी ईसाई हुए वे चालाकी से मिशनवालों के अभिभावकत्व में हो दोनों का लाभ लेकर हिन्दुस्तान के सभ्य से सभ्य समाज के स्तर में आ गये और हम जहाँ थे वहाँ ही रह गये। शिक्षा में उन्नति होने से ईसाई आदिवासी सरकारी नौकरियाँ, व्यापार, खेती, सभ्यता सभी बातों में हम से अच्छे हैं।

उपरोक्त सारी बातों पर ध्यान देने से हमारे लिये जरूरी है कि हमारे भाइयों को उन्नत बनाने के लिये सरकार जो भी कदम उठाती है उसमें संवसार आदिवासियों को ईसाई आदिवासियों मे अलग रख कर भलाई करे। ऐसा नहीं होने से संवसार आदिवासी ईसाई होते ही रहेंगे।

हमारी रक्षा के लिये निम्नलिखित सुझाव हैं जिस के आधार पर हमारी रक्षा और उन्नति हो सकती है।

१. ईसाई आदिवासी अन्य उन्नत समाज की तरह उन्नत होने के कारण हमारे लिस्ट से हटा दिये जांय। यदि उन्हें सरकार सहायता देना ही चाहती है तो भारतीय ईसाई के नाम पर दे तो हमें कोई आपत्ति नहीं है।
२. ईसाई आदिवासियों को असेम्बली, काउन्सिल तथा पार्लियामेंन्ट में आदिवासियों की सुरक्षित सीटों में स्थान न दिया जाय। क्योंकि अन्तर्जातीय विवाह करने के कारण वे आदिवासी नहीं रह जाते।
३. हमारे लिये जो भी बोर्ड बनाये गये हैं उनमें ईसाइयों को लेना हमारे साथ अन्याय करना है! स्कालरशिप (छात्रवृत्ति) के केन्द्रीय बोर्ड में श्री जयपाल सिंह के रहते हुए क्या सरकार बता सकती है कि हमारे और ईसाइयों के कितने लड़कों को विदेश जाने की या अन्य छात्रवृत्ति मिली। आपको पता चल जायगा कि श्री जयपाल सिंह के हृदय में हिन्दू आदिवासियों के लिये कोई स्थान नहीं है। मजे की बात तो यह है कि गैर आदिवासी भी जो ईसाई हो जाते हैं, आदिवासियों के लिये सुरक्षित नौकरियों और छात्रवृत्तियों का उपभोग कर रहे हैं। इस विषय को बिहार राज्य के काउन्सिल में भी प्रश्न के रूप में रखा गया है।

   उपरोक्त विषयों को ध्यान में रखते हुए सरकार द्वारा आदिवासियों के लिये जो कल्चरल बोर्ड बना है उसमें ईसाइयों को स्थान न दिये जायं।
४. हमारे आदिवासी भाई प्रलोभन में पड़कर ईसाई न हों, इसके लिये सरकार यह प्रबन्ध करे कि जो ईसाई होना चाहता है वह जिलाधीश की आज्ञा लेकर ईसाई हो।
५. अभी सरकार जिन संस्थाओं को आदिवासियों की भलाई के लिये रुपये देती है वे राजनीति में भी भाग लेती हैं। इसलिये निष्पक्ष

सेवा होती ही नहीं । अतः सरकार ऐसी संस्थाओं द्वारा आदिवासी समाज की भलाई का काम करावे जिनको राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं है और उस संस्था के कार्यकर्ता भी राजनीति से अलग रहें ।

६. आदिम जाति सेवा मंडल द्वारा संचालित यदुवंश आदिवासी कालेज छात्रावास में पर्याप्त संख्या में आदिवासियों को रहने के लिये स्थान नहीं मिलता । इसके अतिरिक्त संवसार आदिवासियों को कालेजों में भरती होने में उपरोक्त संस्था से कोई सहयोग नहीं मिलता । फलस्वरूप ९ संवसार आदिवासी विद्यार्थियों को अभी तक कालेज में स्थान नहीं मिला है ।

७. पहनई जमीन वही भोग कर सकता है जो गांव की भलाई के लिये आदिवासी देवताओं की पूजा करता है । लेकिन ईसाई होने पर भी राँची जिला में हमारी धार्मिक सम्पत्ति पर ईसाइयों का कब्जा है और हम अनाथ की तरह टुकुर टुकुर देख रहे हैं । सरकार शीघ्र इस पर कार्रवाई करे ।

अंत में हमारी प्रार्थना है कि श्रीमान् हमारे दृष्टिकोण से हमारी भलाई के लिये जो भी उचित कदम हो, उठाने का कष्ट करें और मार्ग प्रदर्शन करें, जिस से यहाँ का आदिवासी समाज आपका ऋणी रहे ।

भवदीय

रामनारायण खलखो

सभापति छोटानागपुर आदिवासी समाज सुधार सभा, करमटोली,
रांची, बिहार ।

२४

नेपाल में ईसाई मिश्नरियों का घातक प्रचार

अखिल भारतीय आर्य (हिन्दू) धर्म सेवा संघ के संयुक्त मन्त्री श्री जनार्दन भट्ट ने नेपाल में विदेशी मिश्नरियों द्वारा जारी 'घातक प्रचार' के सम्बन्ध में एक वक्तव्य देते हुए बताया है कि किस प्रकार वहाँ ईसाई मिश्नरी अशिक्षित, भूखी जनता को अन्न-वस्त्र आदि के प्रलोभन देकर अपने वश में कर रहे हैं ।

श्री भट्ट ने कहा है कि काठमांडू में अमरीका का राजनयज्ञ मिशन और अमरीकी पादरी दोनों मिलकर धर्म प्रचार का कार्य कर रहे हैं । सारा कार्य

नेपाली कर्मचारियों द्वारा ही कराया जाता है जो पादरियों की देख-रेख में काम करते हैं और वेतन अमरीका के राजनीतिक मिशन से पाते हैं । काठमांडू में अमरीकी सरकार एक बहुत बड़ा अस्पताल मिश्नरियों के तत्वावधान में बनवा रही है, जो नेपालियों के धर्म-परिवर्तन का एक प्रधान साधन बनेगा । काठमांडू से लगभग तीन मील की दूरी पर, एक सुन्दर और रमणीक स्थान पर, एक पादरी ने एक शिशु-कल्याण-केन्द्र स्थापित किया है, जिसमें पांच साल से लेकर दस साल तक के बच्चों को शिक्षा दी जाती है और काठमांडू के कई बड़े लोगों और राज्याधिकारियों के बच्चे यहीं शिक्षा पाते हैं । इस संस्था के समस्त अध्यापक तथा अध्यापिकाएं अमरीकी हैं, एक भी देशी नहीं हैं । ऐसा कहते हैं कि इस स्कूल में बाइबिल की शिक्षा तथा ईसाई मत के अनुसार प्रार्थना अनिवार्य है । आगे चल कर यही बच्चे जो ईसाई वातावरण में पाले जा रहे हैं, हिन्दू धर्म पर कितना दृढ़ रहेंगे, यह सोचने की बात है ।

नेपाल में धर्म-परिवर्तन प्राचीन राज्य-नियमों के अनुसार निषिद्ध है, किन्तु नई सरकार प्राचीन नियमों के पालन में शिथिलता बरत रही है, जिससे विदेशी ईसाई मिश्नरियों को अपना जाल फैलाने में सुगमतायें हो गई हैं ।

दैनिक वीर अर्जुन, ९ अक्तूबर, १९५८

२५

भारत व नेपाल में ईसाई मिश्नरियों की घृणित गतिविधि

जालन्धर में आर्य समाज की बैठक में रोष प्रकट

जालन्धर, १ अक्तूबर । यहाँ आचार्य रामदेव की अध्यक्षता में आर्य समाजियों की एक बैठक हुई जिस में भारत तथा नेपाल में ईसाई मिश्नरियों की बढ़ती हुई गतिविधि पर रोष प्रकट किया गया ।

इस बैठक में रहस्योद्घाटन किया गया कि नेपाल में स्कूलों और अस्पतालों के द्वारा धर्म-परिवर्तन का कार्य किया जाता है । नेपाल के पिछड़े इलाके में आर्थिक कठिनाइयों, अशिक्षा और बीमारी का अनुचित लाभ ये लोग उठाते हैं । आज जो नागाओं का आतंक है वह भी इनकी घृणित गतिविधि का परिणाम है । ट्रावनकोर में ईसाइयों ने ३॥ वर्ष में २९॥ करोड़ रुपया खर्च किया है । ऐसी स्थिति में भी सरकार ने इनके विरुद्ध कोई कदम नहीं उठाया है ।

इस बैठक में यह निश्चय किया गया कि प्रमुख आर्य समाजी कार्यकर्ता पण्डित नन्दलाल को नेपाल भेजा जाय जिससे वे वहाँ की जनता को ईसाईयों

की कार्यवाही के विरुद्ध प्रबुद्ध कर सकें।

पता चला है कि इस समय भारत तथा उसकी सीमा पर २० हजार ईसाई मिश्नरी सक्रिय हैं।

———

२६

हिन्दू देवी-देवताओं का अपमान

ईसाई मिश्नरी हिंदुओं की देवी-देवताओं की खिल्ली उड़ाकर, उनके लिये अपमान-सूचक शब्द कह कर तथा अपने मत की श्रेष्ठता बताकर किस प्रकार लोगों को बहकाते हैं—यह निम्नलिखित उद्धरण से प्रगट है। यह उद्धरण मिश्नरियों द्वारा प्रकाशित "राम परीक्षा" नामक पुस्तक से लिया गया है।

५- राम, कृष्ण, महादेव आदि देवता मुक्तिदाता नहीं हो सकते क्योंकि वे सब के सब स्वयं नाना प्रकार की बुराइयों के वश में लिप्त थे।

६- हिन्दू लोग कृष्ण के और सब मनुष्यों से अधिक पाप बतलाते हैं कि वह चोर और कुकर्मी और दुष्ट था। प्रसिद्ध है कि उस ने कंस के निरपराध धोबी का घात किया। ऐसे देवताओं पर आसरा रखना बड़ी मूर्खता है।

११-फिर बहुत लोग ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि देवताओं पर विश्वास रखते कि वे हमें निकालेंगे, पर तुम्हारी सब पुस्तकें उन्हें पास के कुएं में गिरे हुए बताती हैं। सो वे आप निर्बल हैं। हां, उनके लिये भी बचानेहार चाहिए। देवता से लेकर ब्राह्मण तक सबके सब पाप के अधीन हैं।

(देखो नियोगी रिपोर्ट, जिल्द दो, पार्ट बी, पेज ५३)

———

२७

ईसाई बनाने के लिए अस्पताल का उपयोग

(नियोगी रिपोर्ट जिल्द दो, पार्ट बी, गवाही संख्या १७, पेज ७६)

नाम—ताराचन्द अग्रवाल

पिताका नाम—शिवलाल

जाति—अग्रवाल

उम्र—३०

जीविका-गल्ले का व्यापार

पता-बासना

मैं एकबार अपनी पत्नी को जगदीशपुर मिशन अस्पताल में चिकित्सा कराने के लिए ले गया था। मैं डाक्टर के पास गया। उसने मुझे एक पर्ची दी

और कैशियर के पास जाने को कहा। डा० डेस्टर एक विदेशी हैं। जब मैं कैशियर से मिला तो उसने पूछा कि क्या मैं अपनी पत्नी को स्वस्थ देखना चाहता हूँ। उसने इस प्रश्न को तीन बार पूछा तो मैं ने कहा कि मैं निश्चय ही उसे स्वस्थ देखना चाहता हूँ। इस पर उसने कहा कि तब तुम्हें ईसा में विश्वास लाना होगा और नहीं तो तुम यहाँ से जा सकते हो।

किसी प्रकार मेरी पत्नी वहाँ भर्ती हुई। वहाँ मैंने देखा कि रोगियों को प्राय: ७ बजे ईसाई प्रार्थना करनी पड़ती है। इस प्रकार प्रार्थना करना केवल रोगियों के लिए ही अनिवार्य नहीं था, वरन वहाँ के कर्मचारियों के लिए भी था। वहाँ ईसाई धर्म की बहुत सारी कहानियां भी सुनायी जाती हैं जैसे कि एक कोढ़ी एक ऋषि के पास गया जो राम का भक्त था। उसने उससे अपने को नीरोग कर देने की प्रार्थना की। किन्तु कोढ़ी उस ऋषि से अच्छा न हुआ। जब वह उसके पास से लौटा आ रहा था, तब रास्ते में ईसा मिले। ईसा ने उसके लिए प्रार्थना की और वह भला चंगा हो गया। ईसा ने उसे नीरोग कर दिया। उपदेशक ने कहा कि देखातुम्हारे और हमारे भगवान् में क्या अन्तर है? वे बाइबल भी बांटते हैं और चित्रादि भी दिखलाते हैं। वहाँ गैर-ईसाइयों को बहुत अतिरिक्त व्यय करना पड़ता है। अपने धर्म के प्रति आस्था रखने वाले किसी भी गैर ईसाई के प्रति उनका व्यवहार असहनीय होता है।

२८

ईसाई बनाने के लिए अस्पताल और चिकित्सा का प्रलोभन

(नियोगी रिपोर्ट जिल्द दो, पार्ट बी, गवाही संख्या १२, पेज १०४)

नाम—जानकी प्रसाद

पिता का नाम—नारायण

जीविका—दर्जी का काम

पता—तारभर, बिलासपुर

मैं पेन्डेरा सेनीटोरियम में भर्ती था। मुझे अपनी बेड के लिए शुल्क देना पड़ता था। मेरी आर्थिक परिस्थिति अच्छी न थी। डा० थामस ने मुझ से बार बार कहा कि यदि तुम ईसाई हो जाओ तो तुम्हारे लिए नि:शुल्क चिकित्सा उपलब्ध हो सकती है। अमेरिकन महिलायें भी इसी प्रकार कहती रहीं। बेड खाली रहने पर ईसाइयों को फ्री दी जाती है। सात महीने के पश्चात् डिपुटी कमिश्नर के कहने पर कहीं मुझे फ्री बेड मिल सकी। अमेरिकन महिलायें ईसाई धर्म की पुस्तिकायें भी बांटा करती थीं। एक बार उन्हों ने मुझे रामायण

पढ़ते देख लिया और मुझे चेतावनी दी कि यदि तुम रामायण पढ़ोगे तो तुम्हारा स्वास्थ्य गिर जायगा और मुझे अस्पताल में रामायण पढ़ने का कोई अधिकार नहीं है और उससे मैं शान्ति नहीं प्राप्त कर सकूंगा। सामूहिक प्रार्थना सप्ताह में एक बार चर्च में होती है और जो लोग बाहर जा सकते हैं उन्हें भी सम्मिलित होने को कहा जाता है। वहाँ किसी हिन्दू को हिन्दू त्योहार नहीं मनाने दिया जाता। नियमानुसार साधारणतया रोगी ९ बजे रात्रि को सो जाते हैं, किन्तु एक मास पहले से ईसाई ड्रामा का रिहर्सल कराया जाता है और रोगियों को ११ बजे तक उसे देखने को कहा जाता है। ये नाटक ईसा मसीह की जीवनी से सम्बद्ध होते हैं।

ईसाई बनाने के लिए शिक्षा तथा स्त्री का प्रलोभन

(नियोगी रिपोर्ट जिल्द दो, पोर्ट बी, गवाही संख्या २४, पेज १११)

नाम—सादाराम

पिता का नाम—केझा

जाति—सतनामी

पता—तालम

दश वर्ष हुए विदेशी मिश्नरी और फोस्टरपुर के प्रचारक की प्रेरणा से मैं ईसाई हो गया। उन्हों ने मुझ से कहा कि यदि मैं ईसाई बन जाऊं तो वे मुझे अंगरेजी की शिक्षा देंगे, मेरे लिए भूमि खरीद देंगे और मेरा विवाह भी करा देंगे। इसलिए मैं ईसाई बन गया। मैं चार मास तक ईसाई रहा किन्तु मेरे साथ जो उन्होंने वायदे किये थे, पूरे नहीं हुए। अतः मैं फिर अपने धर्म में वापस आ गया।

ईसाई बनाने के लिए ऋण तथा सहायता का प्रलोभन

(नियोगी रिपोर्ट जिल्द दो, पार्ट बी, गवाही संख्या ५ तथा ६, पेज ११७)

नाम—विद्याधर खूंटिया

पिता का नाम—पिताबल खूंटिया

पता—लूदेग

१९३३-३४ की महंगाई के जमाने में तपकारा के एक विदेशी मिश्नरी ने मेरे गांववालों को बुलाया और उन्हें कर्ज दिया। उनकी चोटियां काटी गयीं और वे सभी ईसाई बना लिये गये। शिकायत करने पर रेवरेन्ड तिग्गा, जिनपर लुदेग आने की पाबन्दी लगी हुई थी, वहाँ आये और मेरी रिपोर्ट पर उन पर अभियोग चलाया गया और उन्हें सजा हुई। जब पुराने कानून बदल गये तो उदयपुर में ईसाई मिश्नरियों की गतिविधि काफी बढ़ गयी। लुदेग के ईसाई मिश्नरी झारखंड आन्दोलन के समर्थन में प्रचार करते हैं।

मध्यप्रदेश में देशी राज्यों के विलय के ठीक बाद ही झारखंड की मांग जोर पकड़ गयी। मैं उदयपुर जिला कांग्रेस कमेटी का उप-सभापति था। मेरे पास रिपोर्ट आयी कि जशपुर क्षेत्र के ३०० गैर ईसाई परिवार अपने गांव छोड़ कर आ गये है, क्योंकि ईसाई मिश्नरियों की ओर से उन्हें भय दिखाया गया है कि यदि झारखंड बन गया तो उन्हें या तो ईसाई हो जाना पड़ेगा नहीं तो अपनी सम्पत्ति से उन्हें हाथ धोना पड़ेगा। मुझे यह भी सूचना मिली कि ऐसे १५० परिवार जशपुर इलाके से और ३०० परिवार सरगुजा से आकर उदयपुर में बस गये हैं। इस सम्बन्ध में अपने जांच पड़ताल की रिपोर्ट मैं ने उच्च अधिकारियों के पास भेजी और इस पर एक सरकारी जाँच पड़ताल भी हुई। मध्यप्रदेश के मुख्य मंत्री ने स्वयं उस क्षेत्र का दौरा किया। कुन्कुरी कैम्प में ईसाइयों ने उन्हें काले झंडे दिखाये। मैं उस समय उपस्थित नहीं था।

नाम—घुनू

पिता का नाम—पिल्लाई

जाति—उरांव

पता—लुदेग

बहुत वर्ष हुए मैंने तपकारा के एक पादरी से ६ रू० ऋण में लिए। यदि मैं अपनी चोटी न कटाता तो वह मुझे कर्ज न देता। मैं ईसाई बना और मुझे ६) रू० मिल गये। दूसरे वर्ष सूदसहित मैंने उसके १२ रू० लौटा दिये और फिर उरांव बन गया। जब मै अपने धर्म में वापस आ गया तो कारलूस ने जो लूदेग का अंग्रेजी शिक्षक है, मुझे तंग करना शुरू किया। वह मुझे बार बार ईसाई हो जाने के लिए और अपने बच्चों को ईसाई स्कूल में भेजने को कहता रहा। जब मैं कारलूस से सहमत न हुआ तो उसने मुझे झूठे ही किसी मुकद्दमें में फंसा देने और सजा दिलाने नी धमकी दी। पिछले वर्ष उसने मुझे एक मुकद्दमें में फंसाया भी, किन्तु सौभाग्य से मैं उसमें बरी हो गया, हां मुझे कुछ खर्च अवश्य करना पड़ा।

ईसाई बनाने के लिए स्त्री तथा विवाह का प्रलोभन

(नियोगी रिपोर्ट जिल्द दो, पार्ट बी, गवाही संख्या १०, पेज ११७)

नाम—मंघूराम डूंघलराम

निवास—रेडा

प्राय: आठ या नौ वर्ष पहले मेरे परिवार के कुछ लोग ईसाई हो गये थे। वे लोग यद्यपि मुझे भी ईसाई हो जाने के लिए कहते रहे किन्तु मैं उनसे सहमत न हुआ। उस क्षेत्र का ईसाई मिश्नरी मुझे बार बार कहता रहा कि यदि मैं ईसाई बन जाऊं तो मुझे एक पढ़ी लिखी पत्नी मिल सकती है और वह मुझे

उस अंचल का प्रचारक बना दे सकता है। उससे ऐसा वचन मिलने पर मैं ईसाई बन गया और मैं प्रचारक भी बना दिया गया। मेरा विवाह एक ईसाई लड़की से हुआ। दो वर्ष तक मैं ने प्रचारक का कार्य किया और तब फिर मैं अपने धर्म में वापस आ गया। मेरे अपने धर्म में वापस आते ही मेरी पत्नी मेरा घर छोड़ कर चली गयी। मेरे पिता ने तपकारा के एक मिश्नरी से ऋण लिया था उसे मैंने चुकता किया। फादर बुल्कान्स और माइकेल मुंशी और अन्य व्यक्ति मेरे पास आये और कहने लगे कि शीघ्र ही भारत में विदेशी शासन स्थापित होगा और तुम्हें बहुत कड़ी सजा मिलेगी। मैं फिर ईसाई नहीं बना। जो उरांव मेरे प्रचार के कारण ईसाई हो गये थे, वे मेरे हिन्दू हो जाने के बाद पुनः हिन्दू धर्म में दीक्षित कर लिये गये।

२९

विदेशी मिश्नरियों के विरुद्ध

डा० वेरियर एलविन की चेतावनी

डा० वेरियर एलविन पहले एक अंगरेज पादरी थे, परन्तु बाद को मिश्नरियों के कुकृत्यों को देखकर चर्च से अलग हो गये और पादरी का काम बिलकुल छोड़ दिया। यह चेतावनी उन्होंने आज से प्रायः बारह तेरह वर्ष पहिले लिखी थी, पर विदेशी मिश्नरियों के जिस खतरे का वर्णन उन्होंने अपने इस लेख में किया है वह अब भी वैसा ही बना हुआ है, बल्कि पहले से भी अधिक उग्र हो गया है। उनका मूल लेख अंगरेजी में है—हिन्दी में केवल उसका सारांश नीचे दिया गया है:—

"खेद है आज भी भारत के लोग यह अनुभव नहीं कर रहे हैं कि विदेशी मिश्नरियों के प्रचार का प्रश्न कितना व्यापक, आवश्यक और भीषण है। छोटा नागपुर में लाखों आदिवासी ईसाई बना लिये गये हैं। सुन्दर प्राकृतिक दृश्यों से भरपूर सन्थालपरगना समूचे रूप से शीघ्रता के साथ ईसाई प्रदेश बनता चला जा रहा है। उड़ीसा की गांगपुर स्टेट का हर एक आदिवासी ईसाई बन चुका है। आसाम की समस्त करेन जाति ईसाई बन चुकी है। इसी प्रकार आसाम के लुसाई लोग भी प्रायः सब के सब ईसाई बना लिये गये हैं। पश्चिमी भारत में भीलों तथा अन्य आदिवासियों के बीच तीव्र गति के साथ धर्म-परिवर्तन का कार्य पादरियों द्वारा चल रहा है। मध्यप्रदेश के गोंड और बेगा लोगों को ईसाई बनाने में ईसाई पादरियों ने कोई कसर छोड़ नहीं रखी

है। यदि इसी अबाध गति से मिश्नरियों द्वारा ईसाई बनाने का कार्य चलता रहा तो कुछ ही वर्षों में समस्त वनवासी जातियां ईसाई बन जायंगी और देश में ईसाइयों का एक ऐसा झगड़ालू, अडंगा लगनेवाला समुदाय उत्पन्न हो जायगा जिसकी भावनाएं अराष्ट्रीय होंगी और जो भविष्य में भारत-सरकार तथा भारत की जनता दोनों के लिए एक चुभता कांटा सदा के लिए बन जायेगा।

× × ×

"संसार में कुछ ही ऐसे स्वतन्त्र देश हैं जो अपनी जन-संख्या को धर्मान्तरित होने देते हैं। ईजिप्ट मिश्नरियों पर कड़ी से कड़ी रुकावट रखता है। अफगानिस्तान उन्हें अपने यहाँ धंसने भी नहीं देता। अधिकांश स्वतन्त्र देशों में उनपर प्रतिबन्ध है। मैं यह बिना सन्देह के कह सकता हूँ कि इस सम्बन्ध में भारत अपना कड़ा से कड़ा कानून बनाने में स्वतन्त्र है, जिससे कि किसी भी रूप से होने वाले धर्म-परिवर्तन कार्य पर कड़ा प्रतिबन्ध लगाया जा सके। क्योंकि किसी भी स्वतन्त्र देश को उसके अपने जीवन और संस्कृति से हस्ताक्षेप सह्य नहीं हो सकता। मान लो कोई हिन्दू मिशन इंगलैण्ड जाय और वहां कार्नवाल के शान्तिमय ग्रामों में फैल जाए, फिर वहाँ की जनता को यह भय दिखाना आरम्भ करे कि यदि वे लोग उसकी बात नहीं सुनेंगे तो उन पर अभियोग चलाया जायगा और उन्हें पीटा जायगा और यदि वह मिशन उनके दीवानी और फौजदारी मुकद्दमों में, वहां के न्यायालयों में, हस्ताक्षेप करे, यदि वह वहाँ के स्थानीय ईसाई नेताओं के विरुद्ध घृणित प्रचार कार्य में रत हो जाय, तो वहाँ की ब्रिटिश सरकार उसको कबतक रखना पसन्द करेगी ?

× × ×

"भारत कोई बर्बर या भौतिकवादी देश नहीं है। इस की धार्मिक परम्परा कैथोलिक योरोप से कहीं अधिक प्राचीन है। शक्ति और भौतिकता के इस युग में समस्त विश्व में भारत ही एकमात्र ऐसा देश है जो आज भी आध्यात्मिकता में अटूट आस्था रखता है। शताब्दियों पर शताब्दियां बीती हैं और यह अपना काया कल्प करता आया है। इसमें ऐसे सन्त और योद्धा,कवि और कलाकार, नेता और वैज्ञानिक उत्पन्न होते रहे हैं,जिनकी सफलतायें विश्व में अद्वितीय रही हैं। कोई भी अन्य राष्ट्र होता तो वह सैकड़ों वर्षके विदेशी शासन और अवनति में जीवित नहीं रह पाता। किन्तु आज उसी महान् और उदार देश को ईसाई मिश्नरी यहां आकर धर्म सिखाने और सभ्य बनाने का दावा करते हैं–यह कैसी विडम्बना है ?

× × × × ×

"आदिवासियों का अपना एक जीवन है; उनकी अपनी कला और संस्कृति है; उनका अपना धर्म है; जिसमें वे गहरे रंगे हुए हैं। इन पर्वतनिवासियों की संस्कृति निराली और प्रिय लगनेवाली वस्तु है। उनकी सादगी, ईमानदारी और

सौन्दर्य उन लोगों को भली भांति ज्ञात है जो उनसे परिचित हैं। १३ वर्ष पूर्व जब मैं पहले पहल आदिवासियों के बीच बसा, तो मैं समझता था कि ये पहाड़ी आदिवासी लोग हिन्दू नहीं हैं। किन्तु आठ वर्षों के कठिन अध्ययन और अनुसन्धान के पश्चात् मैं इस परिणाम पर पहुंचा हूँ कि मेरी यह धारणा गलत थी। मैं अब केवल तथ्यों के बल पर ही इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूँ कि मध्य भारत के आदिवासी (मैं आसाम के नागाओं के विषय में कुछ नहीं कहना चाहता जिन्हें मैंने कभी देखा नहीं है) उस धर्म के माननेवाले हैं जो हिन्दू धर्म से निकला है और जन-गणना में उनको हिन्दुओं की ही श्रेणी में परिगणित करना उचित है।

× × × × ×

"कैथोलिक मिश्नरी के कार्य करने का ढंग देखा जाय तो वह तीन प्रकार के शोषण से सम्बन्ध रखता है। पहला तो आदिवासियों की दयनीय आर्थिक परिस्थिति का शोषण है। मांडला में मिश्नरी अपने कैथोलिक चर्च के धन के बल पर उनका बड़ा शोषण कर रहे हैं। निश्चय ही धन का वितरण भूखे मरते हुए आदिवासियों के लिए बहुत बड़ा प्रलोभन है। इस से वे अपढ़, गरीब, भोले भाले आदिवासियों को नौकरी आदि कालोभ देते हैं और नौकरी मिल जाने पर नौकरी छूट जाने का भय दिखा कर उन्हें ईसाई बन जानेको बाध्य करते हैं। मिश्नरी लोग लाइसेन्स प्राप्त कर्ज देनेवालेहोते हैं और कर्ज देना लोगों को फंसाने का एक अच्छा साधन हो जाता है यदि कर्ज लेने वाला चर्च में जाने लगता है तो उससे सूद कम लिया जाता है और यदि वह कहीं ईसाई बन जाये तो वह ऋण से भी मुक्त हो सकता है। ऋण के अतिरिक्त मिश्नरी लोग जिनके असीम धन जमा होता है, किसी भी व्यक्ति को जो उनका समर्थक हो, तरह तरह के उपहार देते हैं जैसे बैलों के उपहार, विवाह-शादी के अवसर पर भेंट इत्यादि। वे गांव के कोटदार, कान्स्टेबल, रेवेन्यू आफीसर को भी कचहरी में मदद करने के उपलक्ष्य में बकसीस देते हैं।

"मिश्नरी लोग आदिवासियों के अज्ञान और अशिक्षा का भी लाभ उठाते हैं। सीधे-साधे भोले-भाले आदिवासी बाहरी संसार का ज्ञान बहुत ही कम रखते हैं, यहाँ तक कि मिश्नरियों का साधारण से साधारण व्यक्ति भी उनके बीच जाकर अपना थोड़ा सा प्रभाव दिखा कर और बातचीत के ढंग से उन्हें आसानी से प्रभावित कर लेता है। मैं अपने १३ वर्षों के अनुभव के आधार पर यह कह सकता हूँ कि वर्तमान में मांडला से अधिक संत्रस्त कोई भी आदिवासी क्षेत्र नहीं है। पादरी के विषय में यहाँ यह धारणा फैली हुई है कि वह पीटता है, धमकाता है और गाली देता है। ये पादरी प्रेम के सन्देश का प्रचार करने वाले

धर्मोपदेशक की भांति नहीं, वरन एक उत्पीड़क के रूप में हैं। एक चपरासी को पीटने पर एक पादरी को सजा भी हुई है। एक दूसरे पादरी के विषय में सुना गया है कि उसने एक पुलिस सब इन्सपेक्टर को पीटा है और पुलिस स्टेशन जाकर वहाँ के कुछ कागजात भी फाड़ डाले जो उसकी मर्जी के खिलाफ थे, इत्यादि।

× × ×

"मैं जोर देकर कहता हूँ कि मिशनरियों को आदिवासी-क्षेत्र से तुरन्त हट जाना चाहिए। हमारा आग्रह है कि इस क्षेत्र की सभी प्रकार की शिक्षा का कार्य सरकार द्वारा संचालित हो। हमारी मांग है कि सरकार जो कुछ यहाँ कर रही है उससे कहीं अधिक किया जाना चाहिए। आदिवासियों को पिछड़ी अवस्था में रखने में हमारा कोई स्वार्थ सिद्ध नहीं होगा। यदि इन्हें हिन्दू समाज में क्षत्रियों जैसा स्थान दिया जाय, उनकी दृष्टि उदार बनायी जाय और उन्हें क्षत्रियों के परम्परागत आत्मसम्मान और साहस की शिक्षा दी जाय, तो उत्तम होगा। सर्वाधिकार आवश्यकता इस बात की है कि सरकार किसी भी ऐसी संस्था को, जो धर्म-परिवर्तन का कार्य करती हो, भारत के किसी भी आदिवासी क्षेत्र में कार्य करने न दिया जाय।"

× × ×

"अन्त में भारत के विशाल हिन्दू समाज से मेरी प्रार्थना है कि आपने सभ्य संसार के कोने कोने में अपने प्रतिभाशाली विद्वान् व्यक्तियों को भेज कर आश्चर्य उत्पन्न कर दिया है, किन्तु आप स्वयं भी जागें। ये आपके करोड़ों आदिवासी भाई आप से छीने जा रहे हैं और ईसाई बनाये जा रहे हैं। आने वाले सैकड़ों वर्षों तक वे आपकी बगल के कांटे बने रहेंगे, यदि आपने उनकी ओर नहीं देखा और तुरन्त उनकी रक्षा का कोई उपाय नहीं किया। आप अवश्य स्वाधीनता के लिए चेष्टा करें। किन्तु राजनैतिक स्वाधीनता केवल एक आधार मात्र है, उस पर जो गौरवशाली उज्ज्वल भवन बनना है वह निश्चय ही धार्मिक और आध्यात्मिक स्वतन्त्रता

लिए जन-शक्ति की, धन की, मस्तिष्क की, कर्मठता ... टूट प्रेम की आवश्यकता है। मिशनरियों के हाथों से ... क महान् कार्य है और इस काम को युद्ध के स्तर पर ... र आप राजनीतिक युद्ध में सर्वस्व निछावर कर रहे हैं, उसी प्रकार इसके लिए भी अधिक से अधिक बलिदान आप करें, यही मेरी प्रार्थना आपसे है।"